संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ नवम्बर २०१४
वर्ष : २४ अंक : ५
(निरंतर अंक : २६३)

सुप्रचार विशेषांक

फीके किये सभी कुप्रचार

विश्वगुरु भारत के कर्णधार, आये गुरुद्वार...

अहमदाबाद आश्रम की पुण्यभूमि पर हजारों विद्यार्थियों ने किया जप-अनुष्ठान
इस बार संख्या रही पिछले वर्ष की अपेक्षा ११ गुना अधिक !

साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज

विजय तो सत्य की ही होती है (पढ़ें पृष्ठ २५)

'ॐ ॐ ॐ बापूजी जल्दी बाहर आयें' की प्रार्थना करते-करते अपने पूज्य गुरुदेव की याद में भाव-विभोर नौनिहाल

"पूज्य बापूजी ! मानव-कल्याण के इस तपश्चर्या-यज्ञ में जो संस्कार की दिव्य ज्योति प्रकट हुई है, उसके प्रकाश में मैं और जनता - सब चलते रहें।" - श्री नरेन्द्र मोदी

सत्य कभी पराजित नहीं होता
(श्री गोलवलकरजी का जीवन-प्रसंग)
(पढ़ें पृष्ठ १६)

महान कार्य करते हैं महान त्याग की माँग
(श्री रंग अवधूतजी पुण्यतिथि : २२ नवम्बर)
(पढ़ें पृष्ठ २३)

'बापूजी ने दिवाली पर हमें भेजी खुशियाँ, पर बापू कब आयेंगे...'

पूज्य बापूजी से प्राप्त लोकोत्थान के संस्कारों के फलस्वरूप साधकों ने दीपावली पर देशभर में विशाल भंडारों का आयोजन कर गरीबों एवं जरूरतमंदों में जीवनोपयोगी वस्तुएँ बाँटी।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २४ अंक : ५
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २६३)
प्रकाशन दिनांक : १ नवम्बर २०१४
मूल्य : ₹ ६
कार्तिक-मार्गशीर्ष वि.सं. २०७१

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में
(१) वार्षिक : ₹ ६०/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)
(१) वार्षिक : ₹ ३००/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ १५००/-

अन्य देशों में
(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क
'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ

भारतीय संस्कृति की महानता का राज

''तुम तो भीतर से बाहर आने की विद्या में आगे बढ़ते दिखते हो लेकिन बाहर से भीतर आना पड़ेगा । उसके बिना शाश्वत सुख-चैन नहीं है ।''

आपको यह खबर होनी चाहिए कि भारत विश्वभर में पूजने लायक कैसे हुआ ?

यहाँ बड़े-बड़े चक्रवर्ती राजा हो गये, पवित्र नदियाँ हैं इसलिए भारत विश्व का गुरु है, ऐसी बात नहीं है। यहाँ बड़े-बड़े महापुरुष प्रकट हुए हैं इसलिए भारत विश्व का गुरु है।

एक बार राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन् विदेश गये । वे एक दार्शनिक थे । वहाँ लोगों ने उन्हें वहाँ के सभी आविष्कार दिखाये और कहा : ''देखिये, हम लोगों ने कितना विकास किया है ! कम्प्यूटर में प्रोग्राम बना दिया है तो यह रोबोट काम कर रहा है। पनडुब्बी बनायी जो पानी के अंदर चलती है।''

राधाकृष्णन् ने कहा : ''ठीक है, लेकिन अभी तुमको बहुत कुछ जानना बाकी है। तुमने मछली की नाईं पनडुब्बी में घूमना सीख लिया, जहाज आदि में पक्षी की नाईं उड़ना भी सीख लिया है और गधे की नाईं रोबोट काम करे वह भी कर लिया लेकिन इनके पीछे जिसकी सत्ता है, उस ईश्वर को जानने के लिए अभी तुम्हें भारत के आत्मवेत्ताओं से ज्ञान लेना पड़ेगा।

तुम तो भीतर से बाहर आने की विद्या में आगे बढ़ते दिखते हो लेकिन बाहर से भीतर आना पड़ेगा। उसके बिना शाश्वत सुख-चैन नहीं है।''

विषयों से इन्द्रियों में आओ, इन्द्रियों से मन में आओ, मन से बुद्धि में आओ, बुद्धि से 'स्व' में आओ तब विश्रांति मिलेगी। झख मार के रात को 'स्व' में आते हैं। वहाँ तो तमोगुण होता है, जरा आराम मिलता है, विश्रांति मिलती है तभी दूसरे दिन काम करने के लायक होते हैं। अगर 'स्व' में नहीं आये तो जीने में नालायक हो जायें। नींद नहीं आये तो फिर देखो क्या हाल होता है ! नींद आती है तो पुष्टि कौन देता है ? वही सच्चिदानंद चिद्घन चैतन्य परमात्मा !

यहाँ महापुरुष परमात्म-प्रेम का दरिया छलकाते हैं। उस प्रेम के दरिया में बच्चा भी नाचे तो बाप भी नाचे, सेठ भी नाचे तो नौकर भी नाचे, अमीर भी नाचे तो गरीब भी नाचे। उनका प्रेम-सागर छलकता है तो दुःखी लोग अपने दुःख भूलकर आनंदित, आह्लादित और शांत हो जाते हैं। यही कारण है कि सत्संग में बहुत दूर-दूर से लोग आते हैं। यह सारा-का-सारा साम्राज्य प्रेम देवता का है। किसी व्यक्ति में, मंत्र-तंत्र में, टोने-टोटकेवाले, धागेवाले में वह ताकत नहीं होती कि ऐसे समझदार, दिमागवाले लोगों, भक्तों, सेठों को भी बाँध सके।

मैं एक बार अजमेर (राजस्थान) गया था। वहाँ ऋषि दयानंद उद्यान में मेरा निवास था। बगीचे में टहलने गया तो वहाँ एक सेवानिवृत्त डीएसपी मुझे देखकर खुश हो गये। बोले : ''बाबाजी ! कहाँ से आये ?'' वे प्रेमवश थोड़े भावावेश में आ गये। मेरे साथ जो साधक था, उसने कहा : ''साँईं ! आपके पास कोई जादू है ?

देखो, बगीचे में कोई भी आदमी देखता है तो वह आपके पीछे पागल हो जाता है !'' फिर मैं जितने दिन वहाँ रहा, वे सत्संग में आते रहे। एक बार अहमदाबाद आकर गये। फिर २० दिन भी उनसे रहा न गया और २० दिन बाद दुबारा आये।

उन पर कोई निर्देश जारी करे कि 'जो संत बगीचे में मिले थे उनके आश्रम में तुमको जाना पड़ेगा, नहीं तो तुम्हारी पेंशन बंद कर देंगे।' तो वे उसको अदालत में ले जायेंगे। पुलिस कमिश्नर कहे कि 'आप (सेवानिवृत्त डीएसपी) राजस्थान से अहमदाबाद के पुलिस कमिश्नर के पास महीने में दो बार सलाम करने जाया करो, नहीं तो आपकी पेंशन बंद करेंगे।' तो वे कमिश्नर को घर बैठाने का रास्ता खोजेंगे।

खैर, वे एक डीएसपी ही नहीं, ब्रह्मांड का कोई भी सात्त्विक हृदयवाला होगा, जिसके पास श्रद्धा-प्रेम की केवल एक बूँद भी होगी, उसको कुछ-न-कुछ मिल जायेगा और वह भूलेगा नहीं। भले ही शरीर से यहाँ न आ सके कभी, पर मन से तो छटपटायेगा कि 'पता नहीं कब जा पाऊँगा !'

टोने-टोटके के बल से, रिद्धि-सिद्धि के बल से आदमी वश नहीं होता। आदमी को वश करना हो तो मैं आपको वशीकरण मंत्र बता देता हूँ। तुलसीदासजी ने कहा है, 'वशीकरण मंत्र प्रेम को।' पूरा प्रेम तो आत्मा में है। तुम जितने गहरे जाओगे, जितने अपने अहंकार को, अपने अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय कोष को भूलते जाओगे उतने आनंदस्वरूप में एक हो जाओगे। जब तुम आनंदस्वरूप में एक होओगे तो ये कोष भी पवित्र हो जायेंगे। इन शरीरों के भीतर जो द्रष्टा है वह जब आँखों से निहारेगा तो तुम्हारी आँखों से न जाने कैसा जादू टपकेगा ! बोलोगे तो तुम्हारी वाणी में न जाने कितना माधुर्य होगा !! जो थियेटर में या इधर-उधर प्रेम दिखाया जाता है, वह केवल धोखा है। सिनेमावालों के पास प्रेम नहीं, वे तो प्रेम का नाम लेकर मोह का जगत उत्पन्न करते हैं।

जो लोग संत कबीरजी पर प्रबंध (Thesis) लिखते हैं, वे डॉक्टर हो जाते हैं, पीएच.डी. हो जाते हैं। उनको बढ़िया नौकरी मिल जाती है, वेतन मिल जाता है, पदोन्नति मिल जाती है लेकिन कबीरजी स्कूल में आ जायें तो उनको क्लर्क की नौकरी नहीं मिलेगी क्योंकि क्लर्क की नौकरी के लिए जितनी पढ़ाई चाहिए उतनी कबीरजी ने नहीं की थी। लेकिन वे प्रेम का एक ऐसा अमृत पढ़े थे कि आज कबीरजी प्रोफेसरों के दिलो-दिमाग में राज्य कर रहे हैं।

उस समय कबीरजी की कद्र नहीं हुई थी। बुद्धिशाली लोगों को कद्र नहीं हुई पर पागलों के पास तो तब भी कद्र थी। कबीरजी के लिए भी कुछ लोग पागल थे तभी तो समाज में उनके विचार फैल गये। गुरु नानकजी की, संत कबीरजी की टूटी-फूटी भाषा है, व्याकरण की कोई व्यवस्था नहीं लेकिन विश्व पर राज्य कर रही है। मेरे पूज्यपाद भगवान लीलाशाहजी महाराज की टूटी-फूटी भाषा मेरे पर राज्य कर रही है और मेरे द्वारा न जाने कितनों पर राज्य कर रही है ! न उनके पास सत्ता थी, न डंडा था, न नोटें थीं। उनको हस्ताक्षर करने में कुछ मिनट लगते थे फिर भी बड़े-बड़े विद्वानों का हृदय उनके आगे झुक जाता है, सिर झुक जाता है। हम उनकी याद करके अपना हृदय पवित्र करते हैं। उनका शरीर नहीं है फिर भी उनकी याद में अपना हृदय पवित्र करने के सौभाग्य की एक घड़ी मिल जाती है। वाह मेरे साँईं लीलाशाहजी ! देखो, हृदय कैसा शीतल होता है। वाह ! वाह !! हृदय में पवित्र भाव उठेगा। वाह गुरु वाह ! वाह साँईं वाह !!

भारत में ऐसे अगणित महापुरुष हुए हैं तथा आज भी हैं जो दिखते तो साधारण हैं परंतु जब अपनी मौज में आते हैं तो प्रकृति में भी उथल-पुथल हो जाती है। आत्मसामर्थ्य के धनी ऐसे महापुरुषों के कारण ही चारों ओर से शत्रुओं से घिरी होने पर भी हमारी सनातन संस्कृति आज भी अपनी चमक बिखेर रही है।

यदि सजग नहीं हुए तो...

तीन दशक पूर्व राष्ट्र-विरोधी ताकतों ने कूटनीतिपूर्वक देशवासियों को भ्रमित करके ऐसी स्थिति उत्पन्न की जिससे दहेज कानून को सख्त करके '४९८ए' को लागू किया जा सके। नतीजा यह आया कि इसका अंधाधुंध दुरुपयोग होने लगा और १२ साल के बच्चे से लेकर वृद्धों तक लाखों निर्दोष सलाखों के पीछे पहुँच गये। आखिर सर्वोच्च न्यायालय को आदेश जारी करना पड़ा कि 'दहेज मामले में गिरफ्तारी जाँच के बाद ही हो।'

इसी प्रकार दामिनी प्रकरण के बाद बने नये रेप कानूनों का भी दुरुपयोग हो रहा है। इस बात को देश के गणमान्य व्यक्तियों तथा न्यायालय ने भी स्वीकारा है। एक मामले की सुनवाई करते हुए अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश कामिनी लाउ ने कहा : ''महिलाओं के प्रति अपराध से संबंधित कानूनों के दुरुपयोग पर अंकुश लगाने की आवश्यकता है।''

पूर्व केन्द्रीय मंत्री कपिल सिब्बल ने कहा : ''आईपीसी की धारा ३७६ (रेप कानून) का दहेज उत्पीड़न से संबंधित धारा ४९८ए की तरह ही गलत इस्तेमाल हो रहा है।''

एक पूर्व मुख्यमंत्री भी इस सत्य को स्वीकारते हुए बोले : ''देश में बलात्कार-रोधी कानून का दुरुपयोग हो रहा है।''

निर्दोष आम नागरिकों से लेकर राष्ट्रहितैषी संत, वरिष्ठतम न्यायाधीश, मंत्री, आला अधिकारी आदि सभी इस कानून के शिकार हो रहे हैं। इसके अनेक उदाहरण 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका के पिछले कई अंकों में प्रकाशित हुए हैं। कुछ अन्य उदाहरण -

नाबालिग ने लगवायी पड़ोसी पर पॉक्सो की धारा

जोधपुर में एक पड़ोसी युवक ने ८वीं कक्षा की एक छात्रा को एक लड़के के साथ भागते हुए देखा था। परिजनों से इस बात को छुपाने के लिए छात्रा ने पड़ोसी युवक पर दुष्कर्म का आरोप लगाया। पुलिस ने युवक के खिलाफ पॉक्सो एक्ट की धारा भी लगा दी। लड़की ने बाद में सच्चाई स्वीकार की, युवक निर्दोष साबित हुआ।

एक केन्द्रीय मंत्री पर भी एक महिला ने बलात्कार का आरोप लगाया था। कड़ी छानबीन के बाद पता चला कि यह षड्यंत्र माफियाओं ने रचा था।

देश व संस्कृति की सेवा में अपना सारा जीवन लगानेवाले तथा करोड़ों लोगों के जीवन में संयम-सदाचार का संचार करनेवाले संत पूज्य बापूजी को भी इसी प्रकार कानून का दुरुपयोग कर बिना किसी तथ्य व सबूत के सुनियोजित षड्यंत्र के तहत जेल भेजा गया है।

इसके पहले भी समलैंगिकता, अंधश्रद्धा उन्मूलन कानून, लक्षित हिंसा बिल आदि ऐसे कानून बनाने का प्रयत्न किया गया, जिनके माध्यम से भारतीय संस्कृति को तहस-नहस किया जा सके।

भारतीय संस्कृति को बचाने के लिए आवश्यकता है सजग होकर इन देशविरोधी ताकतों के मंसूबों को नाकामयाब करने की। देश की जागरूक जनता किसीके बहकावे में न आकर सच्चाई को समझे और ऐसे कानूनों में जल्द-से-जल्द सुधार की माँग करे। यदि अब भी सजग नहीं हुए तो कल आप भी इसके शिकार हो सकते हैं ! - (श्री आर.सी. मिश्र)

****

'रेप को लेकर बने सख्त कानूनों का महिलाओं द्वारा दुरुपयोग करने के मामले सामने आ रहे हैं। इनका हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है। फर्जी मामले दर्ज होना कानून का मजाक उड़ाना है।'

- दिल्ली उच्च न्यायालय

जनता में जागृति की जरूरत है

- श्री बी.एम. गुप्ता, वरिष्ठ अधिवक्ता

पुलिस को अधिकार दिये गये हैं, पुलिस उनका उपयोग भी कर सकती है, दुरुपयोग भी कर सकती है। अगर कोई भी शिकायत किसी अच्छे आदमी के खिलाफ दाखिल होती है तो पहले पुलिस को जाँच करनी चाहिए कि क्या यह आरोप सही है ? बिना किसी जाँच के पुलिस आदमी को उठा लेती है, यह कानून नहीं है।

आरोपकर्ता तथाकथित घटना जोधपुर की बताते हैं । जोधपुर से लड़की अपने गाँव (शाहजहाँपुर, उ.प्र.) जाती है, २-३ दिन के बाद दिल्ली आती है और वहाँ सारा प्लान तैयार होता है । दिल्ली के कमला मार्केट थाने में ५ दिन बाद फरियाद दाखिल होती है। लेट होने का क्या कारण है ? पुलिस का फर्ज है जाँच करना लेकिन एक बार शिकायत दर्ज हो गयी तो चलो उठा लो, चाहे कोई भी हो, यह कानून नहीं कहता है । सर्वोच्च न्यायालय ने निरंजन सिंह केस के फैसले में यह कहा है कि पुलिस को गिरफ्तार करने के अधिकार हैं लेकिन उनके उपयोग का ठोस कारण चाहिए, अभियुक्त के खिलाफ तथ्यात्मक सबूत चाहिए। १२ साल बाद सूरत में एफआईआर दर्ज होती है । आज तक मैंने यह नहीं देखा-सुना कि १२ साल के बाद कोई अपराध दर्ज हो । सूरत के पुलिस कमिश्नर राकेश अस्थाना ने क्यों नहीं कहा कि 'यह अहमदाबाद पुलिस स्टेशन की शिकायत है। जाओ, मैं फोन करता हूँ, वहाँ फरियाद लिखवाओ।'

नारायण साँईं और आश्रम के खिलाफ गलत प्रचार करने के लिए इन्होंने दूसरे ग्राउंड्स (आधार) खड़े किये हैं। पहला, न्यायाधीशों को रिश्वत देने का प्रयास किया। क्या किसी न्यायाधीश ने यह कहा है कि 'हाँ, हमारे को प्रस्ताव दिया गया था ?' दूसरा, डॉक्टरों को पैसे खिलाने का। १२ साल के बाद रेप का कोई सबूत महिला पर या पुरुष के पास से मिलेगा ? डॉक्टरों को कोई क्यों रिश्वत देगा ! उसके सबूत क्या हैं ? कहा गया कि इकबाल नाम के आदमी को डॉक्टरों को प्रस्ताव रखने के लिए माध्यम बनाया गया। उसका बयान जब पुलिस ने लिया तो उसने कहा कि ''मैंने किसी डॉक्टर से बात नहीं की।'' सूरत हॉस्पिटल के एक पुरुष नर्स का बयान पुलिस लेती है, वह भी कहता है कि ''मैंने किसीसे सिफारिश नहीं की।'' तो डॉक्टरों को रिश्वत का कारण कहाँ से खड़ा हुआ ?

तीसरा कारण जेल में जेलरों को रिश्वत देने की बात है, जिससे साँईंजी को ज्यादा सुविधा मिले । मानवाधिकार आयोग ने कैदियों को इतनी सारी सुविधाएँ दी हैं कि उनको एक रुपया किसीको देने की जरूरत नहीं पड़ती। ये सभी बोगस कारण खड़े करके एक 'प्रिवेंशन ऑफ करप्शन एक्ट' का केस खड़ा किया।

इसके अलावा पुलिस साइंटिफिक इन्वेस्टीगेशन (वैज्ञानिक जाँच) क्यों नहीं करती ? फुट प्रिंट, फिंगर प्रिंट, एक्स-रे, विडियोग्राफी ये सब चीजें क्यों नहीं पुलिस उपयोग में लेती ? क्योंकि इनमें पुलिस गलत नहीं कर सकती। गवाह खड़े करना कोई बड़ी बात नहीं है ! आज हर इन्सान के शत-प्रतिशत लोग हितेच्छु नहीं होते, करोड़ों लोगों में १०-२० भी अगर विरोधी हैं और गवाह बन गये तो क्या करोड़ों लोग गलत हैं ?

५-५, १०-१० साल आदमी जेल में पड़ा रहने के बाद जब वह निर्दोष छूट जाय तो उसके परिवार का १० साल में क्या हुआ - यह कभी किसीने सोचा ? जनता में जागृति की जरूरत है। केशवानंदजी की मेडिकल रिपोर्ट में उन्हें क्लीन चिट मिल चुकी थी फिर भी ७ साल जेल में रहे और ७ साल बाद उनकी अपील की सुनवाई हुई और उनको निर्दोष मुक्त कर दिया गया। तो ये ७ साल जो केशवानंदजी के जेल में गये, उसका जिम्मेदार कौन है ? षड्यंत्रकारी क्या मुआवजा देंगे ?

आठ वर्ष का बालक पवित्र माहौल में जन्मता है, रहता है तो आत्मसाक्षात्कार को उपलब्ध हो जाता है । उसकी वाणी सुनकर भुवनभास्कर भी तृप्त हो जाते हैं ।

वास्तविक भोजन

एक बार देवर्षि नारदजी विचरण करते हुए सूर्यलोक में पहुँचे । भगवान सूर्य ने उनका अर्घ्य-पाद्य से पूजन किया ।

सूर्यदेव ने पूछा : "नारदजी ! अभी आप कहाँ से आ रहे हैं ?"

नारदजी : "महीसागरसंगम तीर्थ पर जो महीनगर बसा है, वहाँ के ब्राह्मणों के बीच सत्संग करके आ रहा हूँ ।"

सूर्यनारायण : "वहाँ के लोग कैसे हैं ?"

नारदजी : "जो अपने मित्र हैं, परिजन हैं, मिलनेवाले हैं उनकी प्रशंसा बड़ों के आगे नहीं करनी चाहिए । वे तो सत्संगी हैं, भगवान की भक्ति करनेवाले हैं तो उनमें दोष तो हैं नहीं, निंदा के पात्र भी नहीं हैं तो मैं उनके लिए क्या बोलूँ ? आप स्वयं उनको दर्शन दीजिये अथवा उनकी परीक्षा लीजिये ।"

इस प्रकार की चर्चा करके नारदजी तो विदा हो गये । भगवान सूर्य के चित्त में महीसागरसंगम तट निवासी उन संयमी साधकों को देखने की इच्छा हुई ।

भगवान सूर्य ने एक तेजस्वी ब्राह्मण का रूप बना लिया और उस नगर के ब्राह्मणों की कसौटी करने धरती पर आये । उन ब्राह्मणों ने देखा कि 'कोई वृद्ध पुरुष आ रहा है ।' अतिथि-सत्कार के नियम के अनुसार उनको बहुमान देते हुए "पधारो-पधारो" कह के यज्ञ-मंडप में, अपनी साधना की जगह में उचित जगह पर आसन दिया व अर्घ्य-पाद्य आदि से उनका पूजन किया ।

ब्राह्मणों ने पूछा : "आप भोजन में क्या लेंगे ? आप फलाहारी हैं कि दुग्धाहारी, स्वयंपाकी हैं कि हमारे हाथ का भोजन स्वीकार कर लेंगे ?"

व्यवहार में जो स्नेह है, अहोभाव है वह चित्त को पावन करता है क्योंकि सभी व्यक्तियों में वही ईश्वर छुपा हुआ है । व्यवहार में जो खिन्नता है, उद्विग्नता है, अपमानितता है वह लौटकर अपने पास ही आती है । धन दान, स्वर्ण दान, गौ-दान से भी बड़ा है मान का दान । दूसरे का अपमान करनेवाला पापियों के लोक में जाता है । इसलिए कहा गया है - **अतिथिदेवो भव ।** मान से, स्नेह से, अहोभावपूर्वक मिलने-जुलने से चित्त तुरंत ही पवित्र होता है और अभद्र व्यवहार करने से चित्त उद्विग्न होता है ।

ब्राह्मण वेशधारी भगवान सूर्य ने कहा : "एक होता है प्राकृत भोजन और दूसरा होता है परम भोजन (वास्तविक भोजन) । प्राकृत भोजन की मुझे आवश्यकता नहीं है, मुझे तो वास्तविक भोजन करा दो ।" ब्राह्मणों ने एक-दूसरे की तरफ देखा, तब उन ब्राह्मणों के अग्रणी हारीत मुनि ने अपने ८ वर्ष के पुत्र कमठ से कहा :

"बेटा ! प्राकृत भोजन तो जिस शरीर को जला दिया जाता है उसको पोषण देता है । इस प्राकृत भोजन की इनको आवश्यकता नहीं है, इनको वास्तविक भोजन की आवश्यकता है । मृत्यु जिसकी तरफ झाँक भी नहीं सकती, ये ऐसा भोजन करना चाहते हैं । सत्संग देकर, अलौकिक आत्मज्ञान का भोजन देकर क्या तुम

इनकी भूख मिटा सकते हो ?''

''पिताजी ! आप लोगों की कृपा होगी तो ब्राह्मणदेव जरूर तृप्त हो जायेंगे। आप अपना नित्यकर्म कीजिये। ब्राह्मण तृप्त होंगे, मुझे भरोसा है।''

कमठ ने नम्रतापूर्वक कहा : ''प्रकृति आदि २४ तत्त्वों से बने इस शरीर को जो तृप्त करता है वह प्राकृत भोजन कहलाता है। प्राकृत भोजन मीठा, खट्टा, खारा, कड़वा, कषाय तथा तीखा - इन छः प्रकार के रसोंवाला तथा पाँच भेदोंवाला होता है - भक्ष्य (जो खाया जा सके), भोज्य, पेय (पीने योग्य तरल वस्तु जैसे पानी, दूध), लेह्य (जो पदार्थ चाटकर खाया जा सके) तथा चोष्य (चूसने योग्य)। दूसरा भोजन वह है जो आत्मा को तृप्त करे। आत्मा ही परम है अतः उसे तृप्त करनेवाला भोजन वास्तविक (परम) भोजन है।''

८ वर्ष के छोटे बालक के मुख से ऐसी महत्त्वपूर्ण बात सुनकर ब्राह्मण वेशधारी भगवान सूर्यदेव मन-ही-मन बड़े प्रसन्न हुए और पूछा : ''जीव कैसे उत्पन्न होता है ?''

कमठ ने कहा : ''ब्रह्मन् ! जीव के जन्म लेने में तीन प्रकार के कर्म कारण होते हैं - सात्त्विक, राजस और तामस। जो सात्त्विक कर्म करते हैं उनका स्वभाव सात्त्विक होने लगता है और सात्त्विक स्वभाववाले स्वर्ग आदि ऊँचे लोकों में जाते हैं। वहाँ सुख भोगते हैं, फिर बाद में अच्छे कुल में मनुष्यरूप में आ जाते हैं। उनमें मैत्री, करुणा, मुदिता, उदारता और सत्य की खोज की थोड़ी-बहुत जिज्ञासा रहती है।

राजसी कर्म करनेवाले का स्वभाव राजसी हो जाता है। उनमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य के अंश होते हैं। वे रजस में तो प्रायः रहते ही हैं पर कभी उनका सत्त्व की तरफ झुकाव होता है तो कभी तमस की तरफ झुकाव होता है। वे सुख-दुःख की खिचड़ी खाते भी रहते हैं और पकाते भी रहते हैं। वे जब मरते हैं तो फिर इस लोक में साधारण घर में जन्म लेते हैं और फिर जैसा संग मिलता है, वैसा उनका स्वभाव और समझ बन जाती है, वैसा ही उनको जगत दिखने लगता है।

जो मन को छूट दे देते हैं, नीचे के केन्द्र में अधिक जीते हैं वे तामसी स्वभाव के लोग जीवन के दिन ऐसे ही बरबाद कर देते हैं। तमोगुणी (पापी) लोग पहले नरक में जाकर नाना प्रकार के कष्ट भोगते हैं फिर वृक्ष आदि अधम योनियों को प्राप्त होते हैं। कई वर्षों तक वे दुःख भोगते हैं, आँधी-तूफान सहते हैं। इसके बाद ऐसे अभागे लोग कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी आदि होते हुए अंत में फिर मनुष्य योनि में आते हैं लेकिन वे दुर्बुद्धि होते हैं।

मनुष्य अपने-आपका मित्र भी है और शत्रु भी। अगर तमस व रजस को दबाकर सत्त्वगुण में नहीं जाता और सत्त्व से परे गुणातीत नहीं होता तो उसको कोई बचा नहीं सकता। अगर गुणातीत हो जाय तो उसको कोई गिरा नहीं सकता, कोई मार नहीं सकता। वहाँ तो मौत की भी मौत हो जाती है। वह अकाल-पुरुष हो जाता है।''

कमठ ने इस प्रकार का तत्त्व-निरूपण किया तो ब्राह्मण वेशधारी भगवान सूर्यनारायण चित्त में बड़े प्रसन्न हुए कि 'नारदजी के सत्संग को यहाँ के लोगों ने पचाया है।' सूर्यनारायण ने अपना परिचय देकर उनसे वरदान माँगने को कहा। यह जानकर ब्राह्मणों को अत्यंत आनंद हुआ कि साक्षात् भुवनभास्कर अपने यहाँ पधारे हैं। उन्होंने अर्घ्य आदि देकर उनका पूजन किया और वरदान माँगा कि ''हे प्रभु ! आप हमारे इस स्थान का कभी त्याग न करें।''

भगवान सूर्य ने कहा : ''तथास्तु ! मैं यहाँ 'जयादित्य' नाम से सदा निवास करूँगा।''

कमठ ने सूर्य भगवान की स्तुति की तो सूर्य भगवान प्रसन्न होकर बोले : ''वत्स ! तुमने मुझे पूर्ण संतुष्ट किया है, अतः तुम्हें वर देता हूँ कि इस पृथ्वी पर तुम सर्वज्ञ होकर मोक्ष को प्राप्त कर लोगे।''

आठ वर्ष का बालक पवित्र माहौल में जन्मता है, रहता है तो आत्मसाक्षात्कार को उपलब्ध हो जाता है। उसकी वाणी सुनकर भुवनभास्कर भी तृप्त हो जाते हैं। बच्चे-बच्चियाँ बुरे चलचित्र देखकर बुराई की तरफ चल पड़ते हैं। अमेरिका में एक किशोर ने ७ सहपाठियों को गोली से उड़ा दिया। कहीं ३ को उड़ा दिया। पूछने पर पता चला कि चलचित्रों का असर, फिल्मों का असर ! अतः बच्चे-बच्चियों को गंदे दृश्यों और गलत संग से, किस्से-कहानियों से बचाकर ऊँचे साधन हेतु प्रोत्साहित करके ऊँचे आदमी बनाओ।

क्या सच क्या झूठ, विशेषज्ञों से समझें हकीकत

निर्दोष लोगों को फँसाने के लिए बलात्कार के नये कानूनों का व्यापक स्तर पर हो रहा दुरुपयोग आज समाज के लिए एक चिंतनीय विषय बन गया है। राष्ट्र हित में क्रांतिकारी पहल करनेवाली सुप्रतिष्ठित हस्तियों, संतों-महापुरुषों एवं समाज के आगेवानों को फँसाने के लिए इन कानूनों का राष्ट्र एवं संस्कृति विरोधी ताकतों द्वारा कूटनीतिपूर्वक अंधाधुंध दुरुपयोग हो रहा है। इसी तरह के एक अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र के तहत पूज्य बापूजी को जेल भेजा गया है।

आइये जानते हैं इस बारे में कानून-विशेषज्ञों व इस विषय के जानकारों का मत :

सेवानिवृत्त डी.एस.पी. सतीशचन्द्र मिश्रा कार्य क्षेत्र के अनुभव के आधार पर कहते हैं कि ''यह पाया गया है कि कई बालिग व नाबालिग लड़कियाँ अपने परिजनों के दबाव व कहने पर दुष्कर्म का मामला बना देती हैं।''

जोधपुर मामले में एफआईआर दर्ज करवाने में हुए विलम्ब को साजिश करार देते हुए **पटना हाईकोर्ट की अधिवक्त्री श्रीमती सुमन सिंह कहती हैं :** ''कानून में यह माना गया है कि अगर एफआईआर उसी दिन नहीं होती है तो यह चीज संदेहास्पद है। आप शहर में थे और आपने ५ दिन लगा दिये ? यानी आपके पीछे तंत्र काम कर रहा है बापू को फँसाने के लिए।''

इसी मामले के कुछ और पहलुओं को उजागर करते हुए **वरिष्ठ अधिवक्ता श्री महेश वोडा** कहते हैं : ''दिल्ली में रात के २-४५ बजे लड़की की रिपोर्ट लिखायी गयी जबकि वहाँ का कोई न्याय अधिकार क्षेत्र नहीं बनता है। उसके बावजूद भी उसकी रिपोर्ट लिखी, मेडिकल कराया, बयान लिया और फिर उसको जोधपुर भेजा गया। ऐसा मैंने पहली बार देखा है।''

पूज्य बापूजी के केस में लड़की का मेडिकल करनेवाली दिल्ली के लोकनायक अस्पताल की **गायनेकोलॉजिस्ट डॉ. शैलजा वर्मा** ने अदालत में दिये बयान में स्पष्ट रूप से कहा कि ''मेडिकल के दौरान लड़की के शरीर पर रत्तीभर भी खरोंच के निशान नहीं थे और न ही प्रतिरोध के कोई निशान थे। लड़की का हाईमन इनटैक्ट (ज्यों-का-त्यों) पाया गया था।''

बापूजी के मामले में आरोपकर्ता लड़की की उम्र के विषय में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य बताते हुए **वरिष्ठ पत्रकार श्री अरुण रामतीर्थकर** ने कहा कि ''जहाँ लड़की पढ़ती थी उस श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ एवं लड़की की जीवन बीमा पॉलिसी में दर्ज जन्मतिथि के अनुसार तथाकथित आरोप के अंतर्गत कहे गये दिन वह लड़की बालिग थी। इस तथ्य को मिले कई महीने हो गये हैं लेकिन अभी तक पॉक्सो एक्ट नहीं हटाया गया है। प्राप्त दस्तावेजों की जाँच एवं वैद्यकीय परीक्षण करके लड़की की सही उम्र सामने लायी जानी चाहिए।'' हाल ही में मा. सर्वोच्च न्यायालय ने इन दस्तावेजों की जाँच का आदेश दिया है। (संकलक : श्री ऋषभ शेहरावत)

निर्दोष संत को काटनी पड़ी ७ साल की सजा !

गुजरात में द्वारका के **स्वामी केशवानंदजी** को रेप के झूठे मामले में घसीटा गया था। अधिकारी आपस में मिल गये थे। केशवानंदजी को मीडिया द्वारा इतना बदनाम किया गया था कि कोई वकील उनकी तरफ से केस लड़ने को तैयार नहीं हुआ। आखिर उनको १२ साल की सजा हो गयी। जेल में डलवानेवाले लोग उनके पीछे इतने सतर्क रहे कि किसी भी कीमत पर ये अपील न कर सकें। ७ वर्षों की जेल भोगने के बाद उन्होंने अपील की। न्यायालय ने देखा कि ये तो फँसाये हुए हैं और इनको निर्दोष घोषित कर दिया गया। लेकिन जिस अधिकारी ने यह षड्यंत्र रचा था उसको गोधरा में चीते ने मार डाला। दूसरा अधिकारी अशांति की खाई में जा गिरा, तीसरे को कुछ और भोगना पड़ा... वे तो तबाह हो गये परंतु केशवानंदजी को तो अभी भी वहाँ के लोग मानते हैं, उनका आदर-सत्कार करते हैं।

ॐ ॐ ॐ... २३-१०-२०१४ की यह दिवाली साधकों को बाह्य दर्शन तो नहीं करवाती लेकिन मेरे आंतरिक अनुभव से तुम्हारी श्रद्धा-भक्ति तुम्हें एकाकार करने में बड़ी मदद करेगी। बाह्य संयोग सदा किसीका नहीं रहता और मूल गुरु का 'मैं', ईश्वर का 'मैं', आत्मा का 'मैं' एक ही है व शिष्य का 'मैं' श्रद्धा, प्रीति, ज्ञान से गुरु के 'मैं' से तदाकार होने लगता है तो सहज में ही साधक-शिष्य उस परमात्म-'मैं' में पावन होने लगते हैं। वे धनभागी हैं। **धन्या माता पिता धन्यो...** शिवजी का यह श्लोक आप जानते हैं।

जो गुरु का 'मैं' है, ईश्वर का 'मैं' है, सभी ईश्वरों के ईश्वर सत्स्वरूप, चेतनस्वरूप, आनंदस्वरूप ब्रह्म-परमात्मा है, उससे एकरूप हयात गुरु को जो सच्चिदानंदस्वरूप सर्वव्यापक मानकर सुनते हैं, ध्याते हैं, वे अपने गुरुस्वरूप को, ब्रह्मस्वरूप को अपना ही आत्मस्वरूप जानकर मुक्तात्मा, महात्मा हो जाते हैं... ॐ आनंद... ॐ शांति... ॐ माधुर्य... ॐ गुरुजी... ॐ प्यारेजी... ॐ प्रभुजी... ॐ मेरेजी... वे आत्मविलास में, आत्मज्ञान में प्रतिष्ठित होने लगते हैं। जहाँ चक्रवर्ती राजा का राजसुख व देव, गंधर्व का सुख बाह्य है, तुच्छ है, वहीं प्यारे प्रभु का, प्यारे गुरु का, प्यारे शिष्य का सुख 'स्व' का सुख है, 'स्व' का आनंद है। 'पर' का सुख परेशान करता है, संसार में रुलाता, जन्म-मरण में भटकाता है और 'स्व' का सुख सदा पास में है, जब चाहे गोता मारो, जब चाहे स्मृति कर लो ! ॐ आनंद आनंद... जो पूर्ण गुरु की पूर्ण कृपा-यात्रा कर लेते हैं, उनको यह सहज होता है। उनके लिए जेल जेल नहीं, जोधपुर जोधपुर नहीं, सुख सुख नहीं, दुःख दुःख नहीं - ये सब आभासमात्र ऊपर से ही हो-होकर बदलनेवाली परिस्थितियाँ हैं। जैसे समुद्र में ऊपर फेन, बुदबुदे, झाग, भँवर, तूफानी और शांत तरंगें हैं लेकिन मूल गहरे पानी में ये सब उल्लासमात्र हैं, वैसे ही यह सारा जगत उल्लासमात्र है। तुम्हारा वास्तविक 'मैं' ब्रह्म है, जगदीश्वर है, गुरुस्वरूप है, चैतन्यस्वरूप है; जो तुम्हें कभी छोड़ न सके, जिसको तुम कभी छोड़ न सको ऐसा है।

मेरा सत् चित् आनंदरूप, कोई कोई जाने रे...
चिदानंदरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।
व्यासजी, वसिष्ठजी, लीलाशाहजी ने मिठाई बनायी।
मैंने खायी, तुम्हें खिलायी, ऐसी उत्तम दिवाली मनायी ॥
पूरे हैं वे मर्द जो हर हाल में खुश हैं।

जोधपुर आने की घटना ने साधकों को तपस्वी बना दिया है। गुरु की याद में, विरह में चित्त पावन हो गया है। गुरुकृपा की पावन मिठाई पचानेवाले मेरे प्यारे साधक इस आज के संदेश को दूर-दूर तक सुनेंगे और अब भीतर से तो मिल रहे हो, बाहर से भी जल्दी मिलोगे। है न खुशखबरी !

सत् को आँच नहीं, झूठ को पैर नहीं।

गुरु और प्रभु परे नहीं, पराये नहीं, दूर नहीं। हाजरा-हुजूर... ॐ प्रभु... ॐ गुरु... ॐ शांति... मौन हो जाओ और मन में कहो 'आ जाओ... भीतर से तो हो, बाहर से भी आ जाओ।' आज दीपावली और कल नूतन वर्ष तुम्हारा मधुमय हो। कल सुबह भी बिस्तर पर ही प्रसन्नता, ज्ञान-ध्यान से मस्त हो जाना क्योंकि तुम्हारा असली स्वरूप मस्त है ही - ज्ञानस्वरूप, चेतनस्वरूप, आनंदस्वरूप... !

संसार तेरा घर नहीं, दो चार दिन रहना यहाँ।
कर याद अपने आप की, शाश्वत सुख व ज्ञान जहाँ ॥

मित्र संत पूज्य
श्री लालजी महाराज

(अंक २६१ से आगे)

पूज्य बापूजी के मधुर संस्मरण में लालजी महाराज आगे कहते हैं :

सद्गुरु ने दिया नया नाम

साँईं श्री लीलाशाहजी की पूर्ण कृपा प्राप्त करके आसुमलजी वापस मोटी कोरल आये। उन्होंने मुझे सारी बातें बतायीं कि गुरुजी ने उनका नाम अब 'आशाराम' रखा है।

तब मैंने हाथ ठोकते हुए कहा : "भाईश्री ! गुरुजी ने आपका नाम आशाराम रखा है, वह तो बहुत ही श्रेष्ठ है। 'आशा का दास' - जीव और 'आशा का राम' - ब्रह्म।" ऐसा कहकर हम दोनों खूब हँसे।

इस प्रकार विनोद-विनोद में ऐसी बातें होती रहती थीं। रोज रात को आधा घंटा साथ में बैठते, साधु-संतों की चर्चाएँ होतीं, बहुत आनंद आता।

श्री पंचकुबेरेश्वर में तीन मास निवास करने के बाद वे देश के विभिन्न स्थानों पर भ्रमण करने लगे। डीसा, आबू, गोधरा, हरिद्वार आदि स्थानों पर यात्राएँ होती रहीं। उनके परिचय में जो-जो आते उन सभीको ज्ञान-भक्ति-वैराग्ययुक्त सत्संग का रसपान कराते। जैसे दिन-प्रतिदिन बीज से वटवृक्ष फूलता-फलता है, वैसे ही देखते-ही-देखते उनके सत्संग का प्रभाव अनंत गुना बढ़ता गया। आज अनगिनत साधक उन्हें सद्गुरु के रूप में मान रहे हैं।

पूज्य आशारामजी मेधावी व धर्म के मर्मज्ञ संत हैं, सूक्ष्म विचारक व उत्कृष्ट सत्संगकर्ता हैं। वेदांत का गहरा अभ्यास व स्वानुभव होने से उनका सत्संग-प्रवचन विशेष प्रेरक व प्रभावशाली होता है। इस कारण उनके सत्संग में विशाल संख्या में लोग एकत्र होते हैं एवं जीवन-पथ में नूतन दृष्टि पाने के लिए लाखों-लाखों भाई-बहन मोटेरा (अहमदाबाद) एवं अन्य आश्रमों में आते रहते हैं।

एक बार मैंने उनसे पूछा : "आपके कितने आश्रम हैं ?"

बोले : "१०० जितने।" (तत्कालीन संख्या)

यह सुनकर मैंने सोचा कि वास्तव में संत आशारामजी के द्वारा परमात्मा कौन-सा कार्य करवा रहे हैं वह समझना और समझाना अत्यधिक कठिन है ! मेरी परमात्मा से यही प्रार्थना है कि दैवी आत्मा संत बापूजी दीर्घायु को प्राप्त करें व साधकों को स्वधर्म में सावधान करके परमात्मा का साक्षात्कार करायें।

विनोदी स्वभाव

इतने सारे सत्संग-कार्यक्रमों के दौरान भी कभी आशारामजी मोटी कोरल आकर एकांत में रहते। उनका संतप्रेम भी अनोखा है ! मैं तो उनके सामने नदी के प्रवाह में बहते हुए तिनके जैसा होने पर भी मुझ पर वे कैसा अनूठा एकात्मिक प्रेमभाव रखते हैं ! वर्ष में २-३ बार आकर मुझको भी आत्मा-परमात्मा की बातें बताते, शरीर स्वस्थ रहे इसके लिए सावधान करते एवं प्रेम से खेल-खेल में नाचते और मुझे भी नचाते। नयी-नयी चीजें लाते और अपने हाथों से मुझे खिलाते।
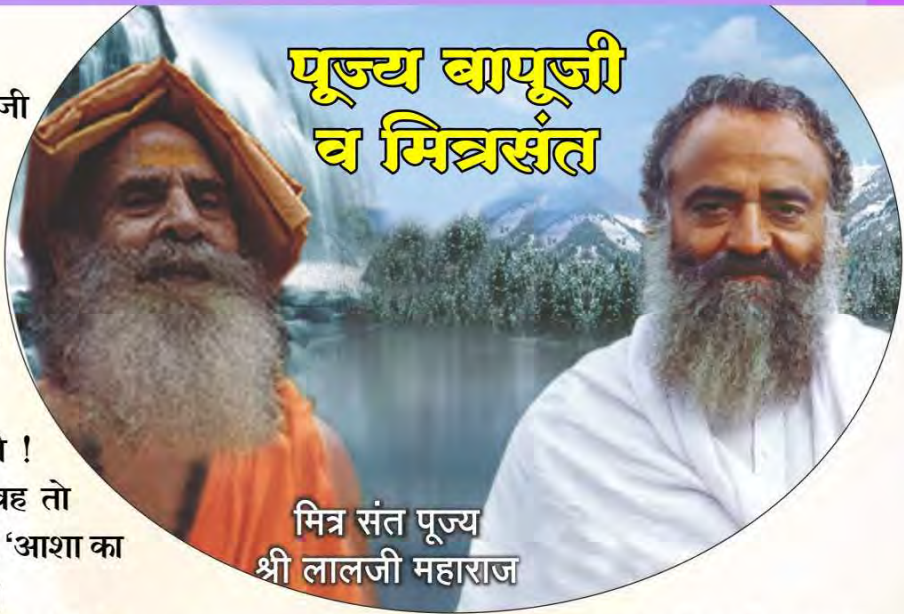
नर्मदा तट पर ध्यान-भजन करके सबको आनंदित करते और प्रतिदिन रात को थोड़ी देर के लिए मेरे से मिलने आते। सत्संग व आत्मज्ञान की चर्चा होती। उस समय अपने साथ वे १ फुट का लकड़ी का टुकड़ा लाते और कमरे से एक थाली ले लेते। फिर जैसे मारवाड़ी लोग भैरोगीत गाते हैं, ताली बजा-बजाकर फाग गाते हैं, उस प्रकार थाली बजाते और नाचने लगते :

फागणियो[1] आयो, वडला हेठे[2] गोपी नाचे रे।
गोपियो रा श्याम रे...
सांज पड़े दिन आथम्यो[3], देवी मगरे[4] वासो लीधो है।
मगरा माथे मंदर[5] है जी, मंदर कणेरो[6] लागे जी।
मंदर अम्बा रो[7] है जी।
वाघ[8] बोले है जी रे, वाघ अम्बा रो है जी।
हुँ हुँ बोरे, हुँ हुँ बो... हुर्रऽऽऽऽऽ

ऐसा करके झूमने लगते। यह तो एक नमूना है। ऐसे तो कई प्रसंग आये। किसी-न-किसी तरह भगवदीय आनंद की तरफ उत्साह व सरलता से ले जाने का कार्य होना चाहिए, ऐसी उनकी आदत उम्दा है। विनोद के साथ ज्ञानगोष्ठी उनका सूत्र है।

(शेष पृष्ठ १३ पर पढ़ें)

बस, भूल हटा दी कि आनंद !

सम्पूर्ण विषयों में जो व्यापक है, सब विषयों का जो प्रकाशक, ग्रहण करनेवाला है, सब विषयों को जो अपने में समेट लेता है (खा जाता है) और जिसका भाव सदा बना रहता है, उसको 'आत्मा' कहते हैं। ये चारों बातें अपने (आत्मा) में हैं और यह आत्मा आनंदस्वरूप ही है।

जहाँ अपने से भिन्न आनंद लेना होता है वहाँ तो करण की, इन्द्रियों की जरूरत होती है परंतु स्वरूपभूत आनंद के आस्वादन के लिए किसी करण की जरूरत नहीं है। शांत, विक्षिप्त, सविषयक, निर्विषयक आदि वृत्तियों की भी जरूरत नहीं है। सब वृत्तियों का प्रकाशक आत्मा ही है। अतः आत्मानंद करण-सापेक्ष नहीं है। अतः उसके लिए प्रयत्न की भी जरूरत नहीं है।

ऐसे आत्मा में दुःख और बंधन केवल अज्ञान से, भूल से हैं। आत्मा की भूल से नहीं, मनुष्य की भूल से। यह मनुष्य देह में अभिमान करनेवाला अज्ञानी हो गया है। वह अपनी भूल-भ्रम दूर कर दे तो स्वयं आनंदस्वरूप ही है।

'ये रोग, अभाव, मौत मुझसे भिन्न कुछ हैं और ये मेरा कुछ नष्ट कर सकते हैं या कर रहे हैं' - यह अपने से भिन्न कुछ मानना भ्रम है। यह द्वैत-प्रपंच है। इसका उपशम (निराकरण) होना चाहिए। सारे साधनमात्र इसीके लिए हैं। अपने स्वरूप-निर्माण के लिए साधन नहीं है। उपशम होते ही स्वस्थता प्राप्त हो जायेगी। अतः वेदांत-विद्या का प्रयोजन अपने स्वरूप का अद्वैत-बोध ही है। प्रपंच का उपशम कर्म, उपासना, योग आदि साधनों से नहीं हो सकता क्योंकि द्वैत-प्रपंच अविद्या की कृति है, अतः ब्रह्मविद्या से ही इसका उपशम होगा।

पुण्यदायी तिथियाँ

२५ नवम्बर : मंगलवारी चतुर्थी (दोपहर १-१७ से २६ नवम्बर सूर्योदय तक)

२ दिसम्बर : मोक्षदा-वैकुंठ-मौनी एकादशी (समस्त पापों का नाशक, कामनाओं को पूर्ण करनेवाला एवं मोक्षप्रदायक व्रत। इसका पुण्य अपने पितरों को दान करें तो पितर मोक्ष को प्राप्त होते हैं।), श्रीमद् भगवद्गीता जयंती

९ दिसम्बर : मंगलवारी चतुर्थी (रात्रि ७-५२ से १० दिसम्बर सूर्योदय तक)

१६ दिसम्बर : षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : सुबह ८-४३ से दोपहर ३-०७ तक)

१८ दिसम्बर : सफला एकादशी (सभी कार्यों में सफलता एवं सुख, भोग और मोक्ष देनेवाला व्रत। रात्रि-जागरण से हजारों वर्ष की तपस्या से ज्यादा फल।)

(पृष्ठ १२ का शेष)

कैसा निर्लेप हृदय !

एक बार श्रावण मास में संत आशारामजी यहाँ आये। पास में दो जगहों पर उनके सत्संग-कार्यक्रम थे। वहाँ मुझे अपने साथ ले गये तत्पश्चात् हम दोनों नदी की ओर गये। वहाँ दूर तक चलने के बाद हम रेत में बैठ गये।

आशारामजी ने कहा : "हम तो सत्संग करते-करते ही आये हैं और रात को सोने में भी देर हो गयी थी। इसलिए हमें तो नींद आ रही है।" ऐसा कहकर वे मेरी गोदी में सिर रखकर वहीं लेट गये। नीचे रेत थी, छोटे पत्थर भी थे। ऐसे में १-२ मिनट में तो उन्हें अच्छी, गहरी नींद आ गयी।

यह देखकर मुझे विचार आया, 'बड़े-बड़े सत्ताधीश, मंत्री भी इनकी मुलाकात के लिए तरसते हैं, इनके आगे हाथ जोड़ते हैं... इतने सारे आश्रम हैं, लाखों-लाखों लोगों के सद्गुरु हैं और इस प्रकार रेत पर निश्चिंतता से सो सकते हैं !' यह बताता है कि उनका हृदय इन सभी लौकिक व्यवहारों से कितना निर्लेप, निर्मल रहा है ! यह उनके हृदय की सरलता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। (क्रमशः)

समत्वयोग की शक्ति व जीते-जी मुक्ति की युक्ति देती है 'गीता'

(गीता जयंती : २ दिसम्बर) - पूज्य बापूजी

हरि सम जग कछु वस्तु नहीं, प्रेम पंथ सम पंथ।
सद्गुरु सम सज्जन नहीं, गीता सम नहिं ग्रंथ॥

सम्पूर्ण विश्व में ऐसा कोई ग्रंथ नहीं जिसकी 'श्रीमद् भगवद्गीता' के समान जयंती मनायी जाती हो। मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्ष की एकादशी को कुरुक्षेत्र के मैदान में रणभेरियों के बीच योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को निमित्त बनाकर मनुष्यमात्र को 'गीता' के द्वारा परम सुख, परम शांति प्राप्त करने का मार्ग दिखाया। 'गीता' का ज्ञान जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति देनेवाला है। गीता जयंती 'मोक्षदा एकादशी' के दिन मनायी जाती है।

इस छोटे-से ग्रंथ में जीवन की गहराइयों में छिपे हुए रत्नों को पाने की ऐसी कला है जिसे प्राप्त कर मनुष्य की हताशा-निराशा एवं दुःख-चिंताएँ मिट जाती हैं। गीता का अद्भुत ज्ञान मानव को मुसीबतों के सिर पर पैर रख के उसके अपने परम वैभव को, परम साक्षी स्वभाव को, आत्मवैभव को प्राप्त कराने की ताकत रखता है। यह बीते हुए का शोक मिटा देता है। भविष्य का भय और वर्तमान की आसक्ति ज्ञान-प्रकाश से छू हो जाती है। आत्मरस, आत्मसुख सहज प्राप्त हो जाता है। **हम हैं अपने-आप, हर परिस्थिति के बाप !** यह दिव्य अनुभव, अपने दिव्य स्वभाव को जगानेवाली गीता है। ॐ ॐ... पा लो इस प्रसाद को, हो जाओ भय, चिंता, दुःख से पार !

गीता भगवान के अनुभव की पोथी है। वह भगवान का हृदय है। गीता के ज्ञान से विमुख होने के कारण ही आज का मानव दुःखी एवं अशांत है। दुःख एवं शोक से व्याकुल व्यक्ति भी गीता के दिव्य ज्ञान का अमृत पी के शांतिमय, आनंदमय जीवन जीकर मुक्तात्मा, महानात्मा स्वभाव को जान लेता है, जो वह वास्तव में है ही, गीता केवल जता देती है।

ज्ञानप्राप्ति की परम्परा तो यह है कि जिज्ञासु किसी शांत-एकांत व धार्मिक स्थान में जाकर रहे परंतु गीता ने तो गजब कर दिया ! युद्ध के मैदान में अर्जुन को ज्ञान की प्राप्ति करा दी। अरण्य की गुफा में धारणा, ध्यान, समाधि करने पर एकांत में ध्यानयोग प्रकट होता है परंतु गीता ने युद्ध के मैदान में ज्ञानयोग प्रकट कर दिया ! भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के माध्यम से अरण्य की विद्या को रणभूमि में प्रकट कर दिया, उनकी कितनी करुणा है !

आज के चिंताग्रस्त, अशांत मानव को गीता के ज्ञान की अत्यंत आवश्यकता है। भोग-विलास के आकर्षण व कूड़-कपट से प्रभावित होकर पतन की खाई में गिर रहे समाज को गीता-ज्ञान सही दिशा दिखाता है। उसे मनुष्य-जन्म के परम लक्ष्य ईश्वरप्राप्ति, जीते-जी ईश्वरीय शांति एवं अलौकिक आनंद की प्राप्ति तक सहजता से पहुँचा सकता है। अतः मानवता का कल्याण चाहनेवाले पवित्रात्माओं को गीता-ज्ञान घर-घर तक पहुँचाने में लगना चाहिए।

वेदों की दुर्लभ एवं अथाह ज्ञानराशि को सर्वसुलभ बनाकर अपने में सँजोनेवाला गीता ग्रंथ बड़ा अद्भुत है ! मनुष्य के पास ३ ईश्वरीय शक्तियाँ मुख्य रूप से होती हैं। पहली करने की शक्ति, दूसरी मानने की तथा तीसरी

(शेष पृष्ठ १५ पर पढ़ें)
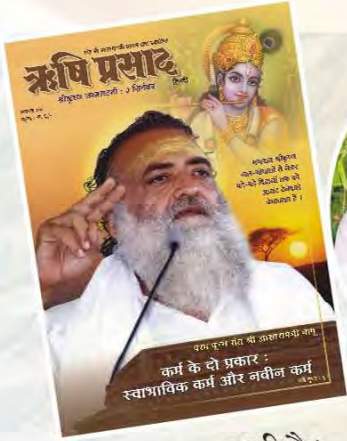
पायें बापूजी का अनमोल प्रसाद

रक्षाबंधन पर्व पर जोधपुर में पूज्य बापूजी के लिए बड़ी संख्या में राखियाँ आयी थीं। पूज्य बापूजी के स्पर्श से सुस्पंदित हुईं इन राखियों पर कई दिनों तक पूज्यश्री की पावन दृष्टि भी पड़ती रही। इन रक्षासूत्रों का अनमोल प्रसाद सभी गुरुप्रेमियों को सुलभ हो सके इसलिए यह योजना शुरू की गयी है।

जो साधक, भक्त 'ऋषि प्रसाद' या 'ऋषि दर्शन' अथवा दोनों के मिलाकर भी २५ सदस्य बना के रसीद बुक क्षेत्रीय 'ऋषि प्रसाद कार्यालय' में जमा करेंगे, उन्हें यह रक्षासूत्र का महाप्रसाद वहीं से प्राप्त हो जायेगा।

जिस वस्तु को ब्रह्मज्ञानी महापुरुष का स्पर्श हो जाता है एवं दृष्टि पड़ जाती है, उसमें उनके आध्यात्मिक स्पंदन व कल्याणकारी संकल्प संचारित हो जाते हैं, जिससे वह वस्तु अनमोल प्रसाद बन जाती है। उसमें आनंद, प्रसन्नता, सुख-शांति देने व मनोकामनापूर्ति करने का असीम सामर्थ्य आ जाता है। ऐसे असंख्य साधक हैं जिनके जीवन में पूज्य बापूजी द्वारा स्पर्शित प्रसाद से चमत्कारिक लाभ हुए हैं। तो शीघ्र लग जाइये क्योंकि यह योजना रक्षासूत्र उपलब्ध रहने तक ही है।

ऋषि प्रसाद स्मृतिचिह्न योजना

जो भी साधक उत्तरायण २०१५ तक 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका के १०० या 'ऋषि दर्शन' विडियो मैगजीन के १० सदस्य बनायेंगे, उन्हें उत्तरायण पर्व पर विशेष कार्यक्रम में सजीव प्रसारण के दौरान स्मृतिचिह्न दिया जायेगा।

****

(पृष्ठ १४ का शेष) जानने की शक्ति। अलग-अलग मनुष्यों में इन शक्तियों का प्रभाव भी अलग-अलग होता है। किसीके पास कर्म करने का उत्साह है, किसीके हृदय में भावों की प्रधानता है तो किसीको कुछ जानने की जिज्ञासा अधिक है। जब ऐसे तीनों प्रकार के व्यक्ति मनुष्य-जन्म के वास्तविक लक्ष्य ईश्वरप्राप्ति के लिए प्रयत्न करते हैं तो उन्हें उनकी योग्यता के अनुकूल साधना की आवश्यकता पड़ती है। श्रीमद् भगवद्गीता एक ऐसा अद्भुत ग्रंथ है जिसमें कर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोग तीनों की साधनाओं का समावेश है।

लोकमान्य तिलक एवं गांधीजी ने गीता से कर्मयोग को लिया, रामानुजाचार्य एवं मध्वाचार्य आदि ने इसमें भक्तिरस को देखा तथा श्री उड़िया बाबा जैसे श्रोत्रिय ब्रह्मवेत्ताओं ने इसके ज्ञान का प्रकाश फैलाया। संत ज्ञानेश्वर महाराज, साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज एवं अन्य कुछ महापुरुषों ने गीता में सभी मार्गों की पूर्णता को देखा।

गीता किसी मत-मजहब को चलानेवाले के द्वारा नहीं कही गयी है अपितु जहाँ से सारे मत-मजहब उपजते हैं और जिसमें लीन हो जाते हैं उस आदि सत्ता ने मानवमात्र के कल्याण के लिए गीता सुनायी है। गीता के किसी भी श्लोक में किसी भी मत-मजहब की निंदा-स्तुति नहीं है।

गीता के ज्ञानामृत के पान से मनुष्य के जीवन में साहस, समता, सरलता, स्नेह, शांति, धर्म आदि दैवी गुण सहज ही विकसित हो उठते हैं। अधर्म, अन्याय एवं शोषकों का मुकाबला करने का सामर्थ्य आ जाता है। निर्भयता आदि दैवी गुणों को विकसित करनेवाला, भोग एवं मोक्ष दोनों ही प्रदान करनेवाला यह गीता ग्रंथ पूरे विश्व में अद्वितीय है। अर्जुन को जितनी गीता की जरूरत थी उतनी, शायद उससे भी ज्यादा आज के मानव को उसकी जरूरत है। यह मानवमात्र का मंगलकर्ता ग्रंथ है।

सत्य कभी पराजित नहीं होता

श्री माधवराव गोलवलकरजी
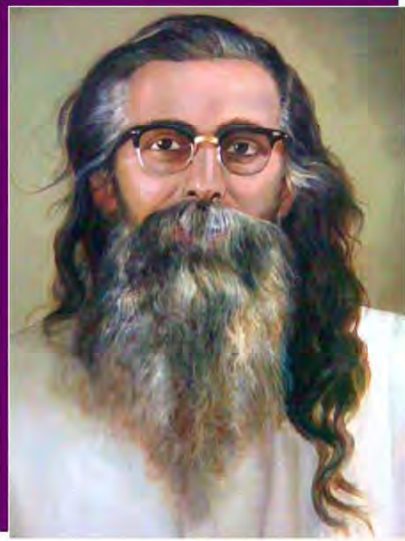
संत-महापुरुषों का हमेशा ही समाज को संगठित करके राष्ट्र को समृद्ध व शक्तिशाली बनाने का उद्देश्य रहा है। परंतु तुच्छ स्वार्थपूर्ति के लिए दिग्भ्रमित हुए लोग अपने पदों का दुरुपयोग कर संतों-महापुरुषों व उनकी संस्थाओं पर अमानुषिक अत्याचार करते आये हैं।

समाजसेवा के क्षेत्र में 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' का अपना एक आदर्श स्थान है। एक समय था जब 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' के सरसंघचालक माधवराव सदाशिवराव गोलवलकरजी थे। उनका जन्म १९ फरवरी १९०६ को नागपुर में हुआ था। उनका जीवन पिता श्री सदाशिवराव और माता श्रीमती लक्ष्मीबाई से प्राप्त सद्गुणों से सुसम्पन्न था। उन्होंने एक संत से भगवन्नाम की दीक्षा लेकर आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत की। साधनामय जीवन से उनके मन में वैराग्य का सागर उमड़ने लगा इसलिए वे हिमालय जाना चाहते थे परंतु उनके गुरुदेव ने उन्हें आज्ञा दी कि "समाजसेवा में हिमालय का दर्शन करो।" गुरुआज्ञा शिरोधार्य कर वे संघ से जुड़कर समाजसेवा में तत्परता से लग गये। वे सदैव स्वयंसेवकों में धैर्य, उत्साह, साहस का संचार करते थे। गुरुनिष्ठा, गुरुआज्ञा-पालन, देशप्रेम जैसे सद्गुणों के कारण विपरीत परिस्थितियों में भी वे कभी विचलित नहीं हुए।

गुरु गोलवलकरजी की गिरफ्तारी

सदियों से यह परम्परा चली आयी है कि राष्ट्रहित में कार्य करनेवालों को अग्निपरीक्षा तो देनी ही पड़ती है। रा.स्व. संघ को भी इस कसौटी से गुजरना पड़ा। ३० जनवरी १९४८ को गांधीजी की हत्या हुई। स्वार्थी तत्त्वों को अपनी स्वार्थपूर्ति का एक अच्छा अवसर मिल गया। वे संघ का कुप्रचार और गांधीजी की हत्या का संबंध संघ से जोड़कर स्वयंसेवकों पर अत्याचार करने लगे।

१ फरवरी १९४८ को वॉरंट जारी कर रात्रि १२ बजे गोलवलकरजी को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी के समय उन्होंने स्वयंसेवकों से कहा : "घबराने की कोई बात नहीं है। हम लोग निष्कलंक बाहर आयेंगे। तब तक हम पर अनेकों अत्याचार होंगे पर हमें उन्हें धैर्य और शांति के साथ सहना है।"

अत्याचार का ताँता यहाँ खत्म नहीं हुआ। ४ फरवरी १९४८ को सरकार ने संघ को अवैध घोषित कर दिया। लगभग २० हजार स्वयंसेवकों को बिना किसी जाँच-पड़ताल के जेल में डाल दिया गया। कुछ दिनों बाद ही सरकार को गोलवलकरजी पर से गांधीजी की हत्या का अभियोग वापस लेना पड़ा।

जब सरकार और संघ के बीच विचार-विनिमय के सभी प्रयास असफल हो गये तो गोलवलकरजी को पुनः नागपुर जेल में डाल दिया गया। धर्म और अधर्म के इस युद्ध में धर्म के पलड़े को हलका होते देख गोलवलकरजी से सहा न गया और उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन का राष्ट्रव्यापी आह्वान कर दिया। इस आह्वान पर देशप्रेमी स्वयंसेवकों तथा आम जनता ने संघ पर लगा प्रतिबंध हटाने के लिए शांतिपूर्ण आंदोलन किया। परंतु अत्याचारियों ने अत्याचार की सीमा पार कर सत्याग्रहियों की एकता और उत्साह को तोड़ने के लिए लगभग ८० हजार स्वयंसेवकों को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें तरह-तरह की यातनाएँ दीं।

जनता की माँग व सत्याग्रह में सत्य का पक्ष लेनेवालों की लाखों की संख्या को देखकर और लगाये गये इल्जामों का कोई ठोस सबूत नहीं मिलने के कारण सरकार ने संघ पर से प्रतिबंध हटा दिया और गोलवलकरजी को जेल से बाइज्जत रिहा कर दिया। दो वर्ष भ्रामक दुष्प्रचार के बावजूद संघ और श्री गोलवलकरजी जनता के शिरोभूषण बन गये। उनके लिए स्वागत सभाओं का आयोजन किया गया, जिनमें लाखों लोग आये।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और गोलवलकरजी की सच्चाई जनमानस तक पहुँची। जिनके हृदय में परहित की भावना है और जो सत्य के रास्ते चलते हैं, उनके आगे कितनी भी दुःख-मुसीबतों की आँधियाँ आयें फिर भी वे उन्हें डिगा नहीं सकतीं। **सत्यमेव जयते**। जीत देर-सवेर सत्य की ही होती है।

संत सताये तीनों जायें...

दीपक चौरसिया पर मँडरा रहे हैं गिरफ्तारी के बादल

झूठी खबरें एवं बनावटी कहानियाँ बना के जनता, प्रशासन व न्यायपालिका में पूज्य संत श्री आशारामजी बापू एवं उनके आश्रम के प्रति नकारात्मक पूर्वाग्रह बनाने के बदइरादे से दुष्प्रचार करनेवाले तथा mediacrooks.com से 'भारत का सबसे खराब पत्रकार २०१४' की उपाधि पाकर नाक कटानेवाले 'इंडिया न्यूज' चैनल के दीपक चौरसिया ने १२ दिसम्बर २०१३ को गुड़गाँव (हरियाणा) के एक परिवार के निजी पारिवारिक विडियो से छेड़छाड़ की एवं उसे तोड़-मरोड़कर अश्लील बनाया और उसमें दिखनेवाली १० वर्षीया मासूम बच्ची और पूज्य बापूजी के लिए अश्लील भाषा का प्रयोग कर उस विडियो को कई बार प्रसारित किया। टीआरपी के भूखे दीपक चौरसिया ने बच्ची के पास खड़े उसके ताऊ को छुपा दिया एवं उसकी ताई को शिल्पी (छिंदवाड़ा गुरुकुल के बालिका छात्रावास की अधीक्षक) बताया, ताकि बापूजी और गुरुकुल को बदनाम किया जा सके। इससे उस छोटी बच्ची एवं उसके परिवार को बहुत मानसिक पीड़ा सहनी पड़ी एवं उनका सामाजिक जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था।

बालिका के घरवालों ने कई दिनों तक पुलिस थाने के चक्कर काटे पर उनकी आवाज किसीने नहीं सुनी। इस अन्याय के विरोध में जब कुछ समाजसेवी संस्थाओं ने धरना-प्रदर्शन आदि किया, तब जा के दीपक चौरसिया और इंडिया न्यूज के अन्य अधिकारियों तथा उसी विकृत विडियो को प्रसारित करनेवाले 'न्यूज नेशन' व 'न्यूज २४' चैनल के खिलाफ बड़ी मुश्किल से जीरो एफआईआर दर्ज हुई। परंतु धनबल व सत्ताबल का दुरुपयोग कर चौरसिया ने एड़ी-चोटी का जोर लगाया और कोई पुलिस कार्यवाही नहीं होने दी। फिर चौरसिया ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय से १८ अप्रैल को अरेस्ट स्टे लेकर जीरो एफआईआर खारिज करने की अर्जी भी लगायी। अर्जी पर सुनवायी करते हुए न्यायालय ने कहा कि ''प्रथम-द्रष्ट्या संज्ञानयोग्य आपराधिक मामला बनता है। अतः यह अर्जी अस्वीकार की जाती है।'' साथ ही न्यायालय ने चौरसिया के अरेस्ट स्टे को रद्द कर दिया।

पॉक्सो जैसी गम्भीर धाराओं के बावजूद हरियाणा व उत्तर प्रदेश पुलिस ने कोई कार्यवाही नहीं की। इतने बड़े बिकाऊ चैनलों के खिलाफ सत्य की लड़ाई लड़ रहे इस परिवार ने सर्वोच्च न्यायालय में इन पर पुलिस कार्यवाही की माँग को लेकर अर्जी लगायी थी, जिस पर १७ फरवरी २०१४ को माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश की पुलिस को जवाब देने का नोटिस दिया था। परंतु इसे कोई महत्त्व न देते हुए पुलिस ९ महीने तक टालती रही। अंत में ८ अक्टूबर को सर्वोच्च न्यायालय ने पुलिस को ७ दिन में जवाब देने का आदेश दिया।

अब पूरे देश की नजर पुलिस पर टिकी है कि वह कब शीर्ष न्यायालयों का सम्मान करते हुए दीपक चौरसिया को गिरफ्तार एवं अन्य चैनलों के खिलाफ कुछ कार्यवाही करती है।

दीपक चौरसिया के खिलाफ ५ एफआईआर व ७० से भी ज्यादा शिकायतें दर्ज

पेड न्यूज और झूठी खबरें प्रसारित करके देश से गद्दारी करने का संगीन अपराध करनेवाले दीपक चौरसिया व 'इंडिया न्यूज' चैनल के खिलाफ देश के विभिन्न स्थानों पर न्यायिक दंडाधिकारी के समक्ष ७० से भी ज्यादा शिकायतें की जा चुकी हैं।

सीतामढ़ी (बिहार) व दार्जिलिंग (प.बंगाल) में एफआईआर दर्ज होने के बाद अब मुजफ्फरपुर (बिहार) में भा.दं.वि. की धारा ११४, १५३, १५३(ए), १९३ (न्यायिक प्रक्रिया में या अन्य प्रसंग में झूठे सबूत देना), २९५(ए), २९८ (धार्मिक भावनाएँ आहत करने के इरादे से बोलना), ५०० (मानहानि करना), ५०४, ५०५ (सार्वजनिक दंगे हों ऐसी झूठी अफवाह फैलाना), १२०(बी) (गैर-कानूनी काम करने की आपराधिक साजिश रचना) तथा आईटी एक्ट ६६(ए) (प्रचार माध्यमों द्वारा आक्रामक संदेश देना), ६७ के अंतर्गत एफआईआर दर्ज हुई है। ऐसी ही दो एफआईआर नवादा और दानापुर (बिहार) में भी दीपक चौरसिया और इंडिया न्यूज के खिलाफ दर्ज हुई हैं। इस प्रकार देशभर में जागरूक जनता अपने व समाज के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाकर कानूनी तरीके से अपने अधिकारों की सुरक्षा की माँग कर रही है। - श्री आर.एन. ठाकुर

सुखमय जीवन के ९ अमृत

- पूज्य बापूजी
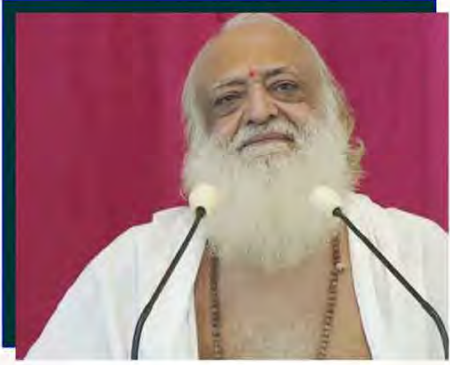
'स्कंद पुराण' में आया कि गृहस्थ के घर ९ प्रकार का अमृत सदैव रहना चाहिए, इससे वह सुखी रहता है। ये सभी बिना पैसे के अमृत हैं।

आपके घर कोई भी आ जाय तो -

(१) उससे मीठे वचन बोलें।

(२) सौम्य दृष्टि से उसको निहारें। चाहे वह कितना भी बदमाश हो, क्रूर हो, कैसा भी हो परंतु आपके द्वार आया है तो उस समय वह अतिथिदेव है। अतिथि में देवत्व देखोगे तो आपका देवत्व जागृत होगा।

(३) सौम्य मुख रखें। उसके साथ सौम्य-सुखद व्यवहार करें।

(४) उसके साथ व्यवहार में आप सौम्य मन बना लीजिये।

(५) आप खड़े होकर उसके प्रति आदर का भाव व्यक्त करें। भले वह आपको गाली देता है, आपका कट्टर दुश्मन है किंतु आपने उसको मान दे दिया, खड़े होकर सम्मान दे दिया तो आधा तो आपने उसको जीत ही लिया और यदि आपने उसको चुभनेवाली बात कह के या अपमानित करके रवाना कर दिया तो आपने अपने लिए अपमान का द्वार चौड़ा कर दिया।

(६) स्वागत के दो मीठे वचन बोलिये और जलपान करा के उसका स्वागत कीजिये।

(७) स्नेहपूर्वक वार्तालाप करें। जैसे - प्रेम से उसको पूछें कि 'कैसे आना हुआ ? आज तो बहुत कृपा हुई...' आदि-आदि।

(८) आप उसके पास थोड़ी देर बैठें।

(९) उसको विदा करने के लिए उसके साथ चार कदम चल पड़ें।

वह आदमी आपसे छोटा हो या बड़ा हो किंतु आपने इन ९ अमृतों का उपयोग किया तो आपका दिल बड़ा बनेगा और उसके दिल में आपका बड़प्पन बैठ जायेगा।

आपने अपना फर्नीचर दिखाकर या धन-दौलत और हेकड़ी से उसको प्रभावित किया तो थोड़ी देर के लिए वह भले भौतिक वस्तुओं से प्रभावित हो जाय लेकिन आपका मित्र बनकर नहीं जायेगा, आपके लिए उसके दिल में कुछ-के-कुछ विचार उठेंगे। आप अपना ऐश्वर्य दिखाकर किसीको प्रभावित करने की गलती न करो। आप अपनी बात कहकर, उस पर प्रभाव जमा के उसको प्रभावित करो - यह बहुत छोटी बात है।

लोग मिलने आते हैं तो आप अपनी सुनाने लग जाते हो किंतु लोग आपकी बात सुनने नहीं आते, आपका दुःख सुनने नहीं आते, वे अपना दुःख और अपनी बात सुनाने आते हैं। आपका अहंकार अपने पर थोपवाने नहीं आते अपितु अपनी इच्छा और अपनी आकांक्षाओं को तृप्त करने के लिए आपसे मिलते हैं। तो आप लोगों की तृप्ति के कारण बनिये। ऐसा नहीं कि लोगों के आगे आप अपनी हेकड़ी के कारण जाने जायें। मान योग्य कर्म करो पर हृदय में मान की इच्छा न रखो, आप अमानी रहो।

'महाभारत' में आता है : 'जो अमानी रहता है अर्थात् मान योग्य कर्म तो करता है पर मान की चाह नहीं रखता, वह सबका सम्माननीय हो जाता है।'

सत्संग में जो कुछ सुनो, उसका मनन, निदिध्यासन करो। नित्य उसके रस में, उसकी निष्ठा में दृढ़ होते जाओ। जिससे 'मैं-मेरा', 'तू-तेरा' स्फुरित होकर बदल जाता है, फिर भी जो ज्यों-का-त्यों रहता है, वही तुम सार-के-सार हो, शाश्वत-के-शाश्वत हो। सफलता-विफलता मायाजाल है। उसे सत्य मत समझो। सत्य तुम स्वयं हो। कई वर्षों में, कई जन्मों में कई सफलताएँ-विफलताएँ आयीं-गयीं, तुम वही-के-वही नारायण... नर-नारी के अयन आत्मा हो तुम ! सफलता-विफलता के साक्षी हो तुम ! तुम अमर आत्मा हो। देह में रहते हुए देहातीत हो ! ॐ ॐ...

बाधाएँ कब रोक सकी हैं...

प्रखर राष्ट्रवादी पत्रकार : योगी अरविंद

(योगी अरविंद पुण्यतिथि : ५ दिसम्बर)
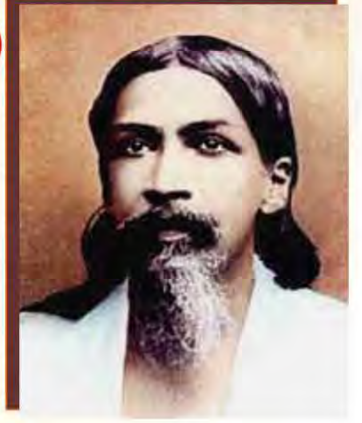
श्री अरविंद एक महान योगी, क्रांतिकारी, राष्ट्रवाद के अग्रदूत और प्रखर वक्ता होने के साथ-साथ एक अच्छे निष्पक्ष पत्रकार भी थे । वे उन पत्रकारों में से एक थे जिन्होंने समाचार पत्रों के माध्यम से जनमानस को स्वाधीनता संग्राम के लिए तैयार करने में प्रमुख भूमिका निभाई थी । भारतीय संस्कृति के रक्षणार्थ भी उन्होंने बहुत काम किया ।

उनके समाचार पत्रों से विचलित होकर अंग्रेज वाइसरॉय के निजी सचिव ने लिखा था कि 'सारी क्रांतिकारी हलचल का दिल और दिमाग यह व्यक्ति है जो ऊपर से कोई गैर-कानूनी कार्य नहीं करता और किसी तरह कानून की पकड़ में नहीं आता । अगर सब क्रांतिकारी जेल में भर दिये जायें, केवल अरविंद ही बाहर रहें तो वे फिर से क्रांतिकारियों की एक सेना खड़ी कर लेंगे ।'

अंग्रेज भारतवासियों को गुलाम बनाये रखना चाहते थे और श्री अरविंद लोगों को जगाना चाहते थे । फलस्वरूप अंग्रेजों ने उनको अपने मार्ग से हटाने की बहुत कोशिशें कीं । लेकिन जब इनसे अंग्रेज सीधी टक्कर न ले सके तो उन्हें साजिश के तहत फँसाया गया ।

षड्यंत्र के तहत जेल भेजा

३० अप्रैल १९०८ को दो अंग्रेज महिलाएँ मारी गयीं और अंग्रेज सरकार को योगी अरविंद पर आरोप लगाने का मौका मिल गया । ३ मई १९०८ को योगी अरविंद के घर पर पुलिस ने छापा मारा और उनके व्यक्तिगत सामान को जब्त करके उन्हें जेल भेज दिया ।

कारागार बना तपोवन

कारागृह को तपःस्थली बनाकर योगी अरविंद एकांत का खूब लाभ उठाते हुए पहले से भी अधिक ध्यान-समाधि में तल्लीन रहने लगे । इस एकांतवास में भी वे समाजहित का चिंतन करते रहे । अब राष्ट्रहित की साधना और भी सूक्ष्म स्तर से जारी थी । लगभग १ वर्ष ३ दिन जेल में रखने के बाद उन्हें निर्दोष रिहा कर दिया गया । उनके देशहितकारी कार्यों के बावजूद उन पर इतने लम्बे समय तक जुल्म ढाये जाने से अब लोगों की सहानुभूति उनके प्रति अनेक गुना बढ़ चुकी थी । जेल से आने के बाद वे सूक्ष्म जगत में ही तल्लीन रहकर अंतिम समय तक देशसेवा करते रहे ।

जब-जब भारतीय संस्कृति के दुश्मनों ने संस्कृति-रक्षक महापुरुषों के सर्वमांगल्य के पथ पर षड्यंत्ररूपी रोड़े बिछाकर उन्हें रोकना चाहा, तब-तब महापुरुषों ने पथ की बाधाओं को भी मानवता व राष्ट्रहित का साधन बना लिया और आगे बढ़ते ही चले गये ।

आज पूज्य बापूजी को भी संस्कृति-द्रोहियों ने झूठे केस में फँसाया है लेकिन परम पवित्र बापूजी की उपस्थिति ने जेल को भी एक तपःस्थली बना दिया है । जेल के कितने ही कैदियों का जीवन उन्नत हो गया है । सुबह जल्दी उठना, भगवन्नाम लेना, आपस में प्रेम-सौहार्द रखना, सत्संग सुनना, सत्साहित्य पढ़ना तथा आदर्श दिनचर्या का पालन करना - ये सद्गुण उनके जीवन में विकसित हो रहे हैं ।

ऐसे महापुरुष जिनके सान्निध्य से गुनहगारों का भी जीवन संयमी, सदाचारी हो जाता है, जिनके संयम-सादगीपूर्ण जीवन से प्रेरित होकर लाखों-करोड़ों युवक-युवतियाँ एवं देश-विदेश के उच्च शिक्षित लोग भी संयम-सदाचार के पथ पर अग्रसर हो रहे हैं, जिन्होंने देश के युवापीढ़ी रूपी धन की सुरक्षा करने के लिए 'युवाधन सुरक्षा अभियान' चलाया, उन्हींके ऊपर ऐसे घृणित आरोप एवं षड्यंत्र कब तक ? देशवासियों पर हो रहे अन्याय के खिलाफ सदैव आवाज उठानेवाले महापुरुषों के साथ इतना अन्याय कब तक ?

ब्रह्मज्ञानियों को जहाँ सताया जाता हो वहाँ...

अथर्ववेद (५.१९.६) में आता है :

उग्रो राजा मन्यमानो ब्राह्मणं यो जिघत्सति ।
परा तत् सिच्यते राष्ट्रं ब्राह्मणो यत्र जीयते ।।

अर्थात् जिस राष्ट्र में ब्रह्मज्ञानियों को, वेदवेत्ताओं को सताया जाता हो, वह राज्य ज्ञानहीन होकर नष्ट हो जाता है।

महापुरुष, ज्ञानवान दूरदर्शी होते हैं और समाज के दोष-दुर्गुणों को दूर करने के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं। वे देश के नागरिकों को चरित्रवान, संस्कारवान व ज्ञानवान बनाने के लिए सतत संघर्ष करते रहते हैं। समाज को ऐसे योग्य व्यक्तियों का सम्मान करना चाहिए।

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूजनीयो न पूज्यते ।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम् ।।

(स्कंद पुराण, मा. के. : ३.४५)

जहाँ पूजनीय लोगों का सम्मान नहीं होता और असम्माननीय लोग सम्मानित होते हैं, वहाँ भय, मृत्यु, अकाल, दरिद्रता, शोक तांडव करते हैं। जैसे सद्दाम व लादेन का सम्मान और महात्मा बुद्ध की मूर्तियों का अपमान हुआ तो उन देशों में भय, शोक, बमबारी, लड़ाई, झगड़े, नरसंहार रुकने का नाम ही नहीं लेते। श्रेष्ठ जनों का अपमान, अवहेलना आबादी को बरबादी में बदलते हैं।

विदेशी शक्तियाँ हमारी संस्कृति को नष्ट करना चाहती हैं। अभी भी समय है कि हम चेत जायें और ब्रह्मनिष्ठ महापुरुषों द्वारा दिखाये गये मार्ग का अनुसरण करते हुए राष्ट्र के एवं स्वयं अपने भी स्वाभिमान की रक्षा करें तथा देश को नष्ट होने से बचायें, भारतीय संस्कृति को, ऋषि-संस्कारों को बचायें।

तुम अमर आत्मा हो

सत्संग में जो कुछ सुनो, उसका मनन, निदिध्यासन करो। नित्य उसके रस में, उसकी निष्ठा में दृढ़ होते जाओ। जिससे 'मैं-मेरा', 'तू-तेरा' स्फुरित होकर बदल जाता है, फिर भी जो ज्यों-का-त्यों रहता है, वही तुम सार-के-सार हो, शाश्वत-के-शाश्वत हो । सफलता-विफलता मायाजाल है। उसे सत्य मत समझो। सत्य तुम स्वयं हो। कई वर्षों में, कई जन्मों में कई सफलताएँ-विफलताएँ आयीं-गयीं, तुम वही-के-वही नारायण... नर-नारी के अयन आत्मा हो तुम ! सफलता-विफलता के साक्षी हो तुम ! तुम अमर आत्मा हो। देह में रहते हुए देहातीत हो ! ॐ ॐ...

निंदक का भल नाहीं...

- संत कबीरजी

हंसा निंदक का भल नाहीं ।
निंदक के तो दान पुण्य व्रत,
सब प्रकार मिट जाहीं ।।टेक।।

'हे विवेकियो ! निंदक का कल्याण नहीं है । निंदक द्वारा किये गये दान, पुण्य, व्रत आदि सब निष्फल ही हो जाते हैं ।'

जा मुख निंदा करे संत की,
ता मुख जम की छाँही ।
मज्जा रुधिर चले निशिवासर,
कृमि कुबास तन माँही ।।१।।

'जिस मुख से संत की निंदा की जाती है वह तो मानो यमराज की छाया में ही है । उसके मुख से मज्जा, रक्त आदि गंदी वस्तुएँ ही रात-दिन बहती हैं और उस व्यक्ति में दुर्गुणों के कीड़े किलबिलाते हैं । उससे कुप्रभाव की दुर्गंध आती है ।'

शोक मोह दुख कबहुँ न छूटे,
रस तजि निरघिन खाहीं ।
विपत विपात पड़े बहु पीड़ा,
भवसागर बहि जाहीं ।।२।।

'जो सत्य, प्रिय वचनरूपी मीठा रस छोड़कर घृणित परनिंदा का आहार करता है, उसके जीवन से दुःख, मोह, शोक कभी नहीं छूटते । उस पर बार-बार विपत्ति पड़ती है, उसका पतन एवं विनाश होता है । उसके ऊपर दुःखों के पहाड़ टूटते हैं । वह रात-दिन मलिनता एवं भवसागर में बहता है ।'

निंदक का रक्षक कोई नाहीं,
फिर फिर तन मन डाहीं ।
गुरु द्रोही साधुन को निंदक,
नर्क माँहि बिलखाहीं ।।३।।

'निंदक का कोई रक्षक नहीं होता । उसके तन-मन सदैव जलते रहते हैं । जो गुरुद्रोही है, साधु-संतों की निंदा करनेवाला है, वह जीते-जी मन की अशांति रूपी नारकीय जीवन सहज में प्राप्त कर लेता है और मृत्यु के बाद घोर नरकों में पड़ा बिलखता रहता है ।'
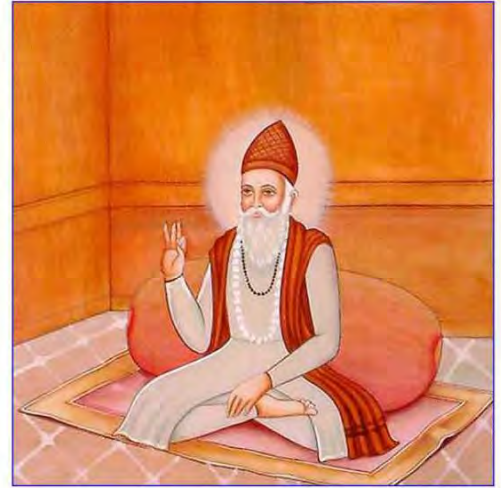
जेहि निंदे सो देह हमारी,
जो निंदे को काही ।
निंदक निंदा करि पछितावै,
साधु न मन में लाहीं ।।४।।

'विवेकवान समझते हैं कि यदि कोई हमारी निंदा करता है तो वह हमारे अपने माने गये शारीरिक नाम-रूप की ही निंदा कर रहा है, मुझ शुद्ध चेतन में उसका कोई विकार नहीं आ सकता । जो निंदा करता है वह कौन है और वह किसकी निंदा करता है, इसका उसे पता नहीं है । वह यदि अपने देहातीत आत्मस्वरूप को समझ ले तो न दूसरे की निंदा करेगा और न अपनी निंदा पाकर दुःखी होगा । निंदक को निंदा करके अंत में केवल पश्चात्ताप ही हाथ लगता है लेकिन सज्जन तथा साधु निंदक की बातों को अपने मन पर ही नहीं लाते हैं ।'

दया धरम संतोष समावै,
क्षमा शील जेहि माँही ।
कहैं कबीर सोइ साधु कहावै,
सतगुरु संग रहाहीं ।।५।।

'जिनमें दया है, धर्माचरण है, जो संतोष में लीन हैं, जिनमें क्षमा और शील विराजते हैं, संत कबीरजी कहते हैं कि वे साधु एवं उत्तम मनुष्य कहलाते हैं । वे सदैव सद्गुरु के उपदेशों के अनुसार चलते हैं ।'

महान कार्य करते हैं महान त्याग की माँग

(संत रंग अवधूतजी महाराज पुण्यतिथि : २२ नवम्बर)

पांडुरंग नामक एक बालक गुजरात में रहता था । एक बार वह बीमार हो गया । दिनोंदिन बुखार बढ़ने लगा । दवाएँ लीं, नजर उतरवायी, सब किया किंतु सुधार नहीं हुआ । बीमारी इतनी बढ़ी कि डॉक्टर-वैद्यों ने आशा छोड़ दी ।

एक दिन पांडुरंग को लगा कि उसका आखिरी समय आ गया है । उसने माँ व छोटे भाई को बाहर भेजकर दरवाजा बाहर से बंद करवा दिया और अंतर्मुख होकर मनोमंथन करने लगा कि 'मेरा जन्म निरर्थक चला गया । यह मानव-शरीर मलिन, क्षणभंगुर होने के बावजूद भी मोक्षप्राप्ति का साधन है । गुरुदेव ! मैं आपका अपराधी हूँ, मुझे क्षमा करें । कृपा करके मुझे बचा लीजिये । अब एक पल भी नहीं बिगाड़ूँगा ।'

प्रार्थना करते-करते पांडुरंग शांत हो गया । अवधूत दत्तात्रेयजी प्रकट हुए और आशीर्वाद देकर अदृश्य हो गये । गुरुकृपा से पांडुरंग को नया जीवन मिला । देखते-देखते पांडुरंग का स्वास्थ्य सुधरने लगा । गुरुदेव को दिये वचन के अनुसार अब वह समय बिगाड़ना नहीं चाहता था । प्रभु-मिलन की उत्कंठा वेग पकड़ रही थी । पांडुरंग एक दिन ध्यान में बैठा था तब गुरुदेव ने आज्ञा दी : ''पांडु ! अब तेरा नया जन्म हुआ है । समय व्यर्थ नहीं जाने देना । जल्दी घर छोड़ दे ।''

पांडुरंग ध्यान से उठा और माँ के पास गया । रुकमा सब्जी काट रही थीं । पांडुरंग हिम्मत करके बोला : ''माँ ! मैं तुमसे आज्ञा लेने आया हूँ ।''

''आज्ञा ?''

''हाँ माँ ! आज गुरुदेव ने ध्यान में आ के मुझे स्पष्ट कहा कि पांडु ! उठ, संसार छोड़ के अलख की आराधना में लग जा !''

माँ की आँखों से अश्रुधाराएँ बहने लगीं ।

''बेटे ! साधना करने की कौन मना करता है ? घर में रह के जितनी करनी हो, कर लेना ।''

''माँ ! घर में रह के साधना नहीं हो सकती । आसक्ति हो जायेगी । अनजाने में ही संसार में प्रवेश हो जाता है ।''

रुकमा फूट-फूटकर रोने लगीं और बोलीं : ''मेरा भाग्य ही फूटा है । हे भगवान ! अब मैं क्या करूँ ?'' माँ ने जोर-जोर से सिर पटका, जिससे सिर से खून बहने लगा और वे मूर्च्छित हो गयीं । माँ की दयनीय स्थिति देख पांडुरंग गुरुदेव से प्रार्थना करने लगा : ''गुरुदेव ! अब और परीक्षा न लीजिये, मार्गदर्शन दीजिये ।''

कुछ क्षण बाद माँ की मूर्च्छा खुली । पांडुरंग ने कहा : ''माँ ! ममता छोड़ो, जाये बिना मेरा छुटकारा नहीं है । इतिहास साक्षी है कि जगत के कल्याण के लिए माताओं का त्याग हमेशा महान रहा है । माँ कौसल्या ने रामचन्द्रजी को वन में न जाने दिया होता तो जगत को त्रास देनेवाले रावण का संहार कौन करता ? विश्व को रामायण की भेंट कैसे मिलती ? श्रीकृष्ण-जन्म के बाद माँ देवकी ने महान त्याग नहीं किया होता तो जगत को गीता-ज्ञान कौन सुनाता ? महान कार्य महान त्याग की माँग करते हैं । माँ ! मुझे आज्ञा दो ।''

माँ कुछ ही क्षणों में स्वस्थ हो गयीं । उनका कमजोर हृदय वज्र समान हो गया । वे पांडुरंग के सिर पर हाथ घुमाते हुए बोलीं : ''बेटा ! तू स्वयं जाग व दूसरों को जगा । जा, मेरा आशीष है ।''

''माँ ! तुम्हारे जैसी माताओं के त्याग के आगे पूरे विश्व के वैभव का त्याग भी नन्हा होगा ।''

माँ को प्रणाम करके वह घर से निकल पड़ा । संसार को छोड़ 'सार' (परमात्मा) की प्राप्ति के लिए पांडुरंग लग गया । आगे चलकर यही पांडुरंग श्री रंग अवधूत महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए ।
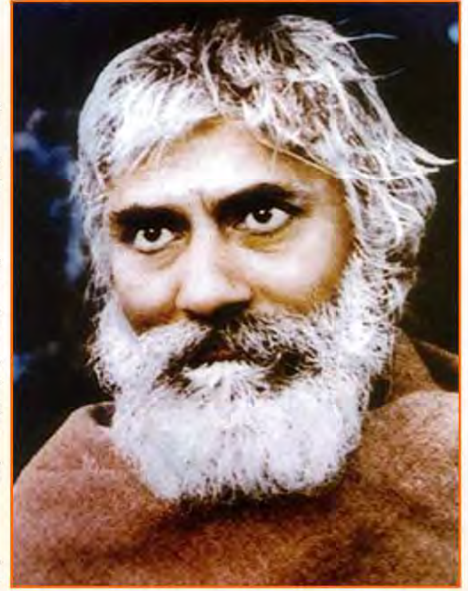
नारी रक्षा मंच ने छेड़ा जन-आंदोलन

निर्दोष संत पूज्य बापूजी को पिछले १४ महीनों से बिना किसी ठोस सबूत के जेल में रखे जाने के विरोध में देशभर में लाखों महिलाएँ अब सड़कों पर उतर आयी हैं । महिलाएँ देशभर में शांतिपूर्ण तरीके से विशाल मार्च (रैलियाँ) निकालकर इस घोर निंदनीय षड्यंत्र का विरोध करते हुए देशवासियों को जागृत कर रही हैं और बता रही हैं कि 'महिला सुरक्षा कानूनों' की आड़ में असामाजिक तत्त्व देश के गणमान्य व्यक्तियों और संतों को फँसाकर किस प्रकार से देश व समाज को तोड़ने का कुप्रयास कर रहे हैं ।

३१ अगस्त को दिल्ली में हुई महा रैली के बाद ७ अक्टूबर को नागपुर (महा.) में और १३ अक्टूबर को अहमदाबाद में विशाल 'नारी शक्ति मार्च' निकाला गया, जिसमें अनेक नारी संगठनों ने एकजुट होकर भाग लिया । इसके साथ ही दिल्ली में एक और विशाल रैली निकली तथा रायपुर आदि स्थानों में भी नारियों ने रैलियाँ निकालीं ।

अहमदाबाद की विशाल रैली में हिन्दू धर्म सभा, सनातन संस्था (महिला शाखा), हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट, शक्तिसेना, नारी उत्थान मंडल आदि महिला संगठनों के साथ हजारों की संख्या में शामिल हुई महिलाओं ने बापूजी की शीघ्र रिहाई के लिए जमकर प्रदर्शन किया । बलात्कार-विरोधी कानूनों के दुरुपयोग पर रोक लगाने की माँग एवं पूज्य बापूजी की निर्दोषता दर्शाती हुई तख्तियाँ तथा बैनर हाथों में लेकर, दोपहर की कड़ी धूप में घंटों पैदल मार्च करती हुई महिलाओं का आक्रोश साफ झलक रहा था । इनका कहना था कि ''जिन बापूजी ने असंख्य महिलाओं में नैतिक, चारित्रिक व आध्यात्मिक बल का संचार किया है, ऐसे बापूजी के ऊपर कोई लड़की झूठा आरोप लगा देती है तो बिना किसी जाँच के बापूजी को कारागार में भेज दिया जाता है और करोड़ों महिलाएँ जो बापूजी के समर्थन में बोल रही हैं उनकी आवाज को अनसुना किया जा रहा है, ऐसा क्यों ? अभी तक बापूजी के खिलाफ कोई भी ठोस सबूत व तथ्य नहीं मिले हैं और आरोप लगानेवाली लड़की की मेडिकल रिपोर्ट से भी बापूजी की निर्दोषता सिद्ध होती है । लड़की के बालिग होने संबंधी कागजात उपलब्ध होने के ९ महीने बीतने के बावजूद भी पॉक्सो की धारा क्यों नहीं हटायी गयी है ?''

इन विभिन्न मुद्दों पर रैली के बाद प्रधानमंत्री, केन्द्रीय गृहमंत्री, केन्द्रीय कानून मंत्री, मुख्यमंत्री (गुजरात) आदि के नाम ज्ञापन सौंपे गये ।

विजय तो सत्य की ही होती है

एक बार आगरा में साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज सत्संग-मंडप में व्यासपीठ पर विराजमान थे। उस समय किसी भक्त ने धर्म की विजय के बारे में स्वामीजी से पूछा : ''स्वामीजी ! चारों ओर युद्ध के काले बादल मँडरा रहे हैं, जिन्हें देखकर दिल काँप उठता है। अंत में विजय किसकी होगी ?''

पूज्य स्वामीजी ने मंद-मंद मुस्कराते हुए जवाब दिया : ''बाबा ! यह कोई नयी बात नहीं है। युगों से यह रीति चली आ रही है। प्रकृति के नियम के अनुसार हमेशा धर्म की विजय और अधर्म का नाश होता है। कौरव एवं पांडव के युद्ध को हजारों वर्ष हो गये फिर भी आज पांडवों का यश चमक रहा है। श्रीरामचन्द्रजी के साथ रावण का घोर युद्ध हुआ, जिसमें कई राक्षस मारे गये। अंत में भगवान राम की विजय हुई। अत्याचार, अधर्म, अनीति और अन्याय के कारण कौरव एवं रावण की आखिर में पराजय हुई। पाप का घड़ा भरकर अंत में फूट जाता है। जो धर्म के, सत्य के, कल्याण के मार्ग पर चलता है उसे भला भय कैसा ! उन लोगों को शुरुआत में दुःख अवश्य झेलना पड़ता है परंतु अंत में विजय तो सत्य की ही होती है।

विजय तुम्हारी होगी

बुरे व्यक्ति अच्छे कार्य में विघ्न डालते रहेंगे परंतु **'सत्यमेव जयते।'** देर-सवेर सत्य की ही जीत होती है। धर्म का अंग सत्य है। सज्जन-सज्जन लोग संगठित हों। लगातार आगे बढ़ते रहो... आगे बढ़ते रहो। विजय तुम्हारी होगी।''

संतों के निंदकों को चेतावनी

संतों के निंदक हर युग में सदा ही होते आये हैं।
पर संतों के धर्मकार्य को ये बिगाड़ ना पाये हैं।।
उल्टे अपने कर्मों का फल ये निंदक ही पाते हैं।
नहीं चैन से जी सकते, हो कर अशांत मर जाते हैं।।
क्रूर कर्मों के कारण इनकी, बुद्धि मलिन हो जाती है।
संतद्रोह करने में इनको बड़े लाभ दिखलाती है।।
संतों के ये पामर निंदक एक बार फिर जागे हैं।
होड़ लगा आरोप लगाने को तेजी से भागे हैं।।
बढ़े हौसले से फिर बापू आशारामजी को छेड़ा है।
झूठे मनगढ़ंत आरोपों से उनको भी जोड़ा है।।
अफवाहों की घटा घिराकर दुष्प्रचार का जोर चला।
झूठी तथ्यहीन बातों से सत्य का घोंटा खूब गला।।
किंतु सत्य है शाश्वत, उस पर आँच न आती है।
संतों के बढ़ते प्रभाव से, इनकी फटी छाती है।।
स्वार्थी लोग हैं ये, इनको बस धन ही है सबसे प्यारा।
ऐसे लोगों ने समाज के, अमन-चैन को है मारा।।
धर्मप्रेमी जनता को कैसे गुमराह ये करते हैं।
संतों के प्रति सब के मन में कैसे नफरत भरते हैं।।
भारतवासी जितने भी हैं, सब ही हैं हमको प्यारे।
किंतु हिन्दू धर्म, संत के निंदक, बड़े अभागे हैं सारे।।
उठें संस्कृतिप्रेमी सब यह समय न है चुप रहने का।
बहुत हो चुका मौन, तमाशा देख लिया है सहने का।।
शक्ति लगा लें निंदक कितनी, दाल न गलनेवाली है।
महाकाल के आगे इनकी एक न चलनेवाली है।।
मार पड़ेगी जब कुदरत की, तब ये तौबा बोलेंगे।
'त्राहिमाम्' बोलेंगे जब, शिव नेत्र तीसरा खोलेंगे।।

- श्री ओ.पी. मिश्रा

गुप्तासन

लाभ : इसका गुण भी गुप्त है और इसमें दोनों पैरों को छिपाकर बैठा जाता है। यह ऐसा आसन है जिसके द्वारा सूक्ष्म-से-सूक्ष्म नाड़ियों पर सूक्ष्म प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। यह गुप्तासन स्त्री, पुरुष, योगी, भोगी और चंचल चित्तवाले - सभीको लाभ पहुँचाता है।

इस आसन के अभ्यास से स्वप्नदोष दूर होता है। वीर्यदोष तथा वीर्य की चंचलता दूर होती है तथा अखंड ब्रह्मचर्य की सिद्धि होती है। यह मूत्र-संबंधित बीमारियों के लिए परम उपयोगी है। इसके अभ्यास से चित्राख्या नाड़ी पर सीधा प्रभाव पड़ता है, जिससे जननेन्द्रिय में भलीभाँति रक्त का संचार होने लगता है। गुदा और जननेन्द्रिय संबंधित बहुत-सी बीमारियाँ इसके अभ्यास से ठीक हो जाती हैं। गुप्तासन को उड्डीयान और मूल बंध के साथ करने से कुंडलिनी शक्ति अतिशीघ्र जागृत होती है।

विधि : जमीन पर बैठकर बायें पैर को इस प्रकार रखें कि एड़ी ऊपर की तरफ गुदा से लग जाय। तत्पश्चात् नितम्बों को ऊपर उठाकर दायें पैर को बायें पैर की पिंडली और जंघा के बीच में इस प्रकार छिपायें कि पंजे का हिस्सा बाहर न हो। बायें पैर का पंजा दायें पैर के नीचे छिपा हो। तत्पश्चात् दोनों हाथों को घुटनों पर रखते हुए कमर के ऊपरी भाग को बिल्कुल सीधा रखें। ध्यान रखें कि दायें पैर की एड़ी का हिस्सा गुदा के साथ-साथ सिवनी नाड़ी को भी पूर्णतया दबाता रहे अर्थात् गुदा के पास से बिल्कुल उठने न पाये।

ढूँढ़ो तो जानें

मोक्षदायिनी सप्तपुरियों के नाम नीचे दिये गये प्रश्नों के आधार पर वर्ग-पहेली से खोजें।

वृं	कां	ची	सू	र	ज	ह	मे	ह	ता	क	शी
दा	य	य	श्री	स	न	क	र	जी	बा	क	ज
व	ध्य	वि	श	वा	मि	त्र	ते	जी	क	श	रा
न	क्षा	ए	म	थु	रा	ग्नि	म	इ	हा	य	धा
श्री	म	प	ब्र	च	द	ज	द	उ	चा	ची	ह
न	म	न	न	म	शा	ऊ	ज	चा	की	रि	रि
ग	र	द्वा	ज	आ	ज्ञो	ष	य	म	गौ	भ	द्वा
र	क	र	श्री	ति	सि	श	कां	ई	त	बा	र
कों	वि	क	खं	व	शं	र	म	मा	म	रा	क
क	सं	त	उ	ज	जै	न	सू	र	त	हे	न
ण	च	फ	म	अ	त्रि	बु	ल	ती	स	मा	ख
म	ल	घ	सं	ध	न	शं	अ	यो	ध्य	या	जी

(१) वह कौन-सी नगरी है जिसकी उत्तर दिशा में पावन सरयू नदी बहती है ?

(२) कहाँ के दुष्ट राजा ने राज्य के सभी नवजात शिशुओं को मार डालने का आदेश दिया था ?

(३) प्रसिद्ध घाट 'हर की पौड़ी' किस शहर में है ?

(४) 'मणिकर्णिका घाट' किस नगरी में है ?

(५) कहाँ के शंकराचार्य को झूठे खून केस में गिरफ्तार किया गया था जो बाद में निर्दोष छूटे थे ?

(६) भगवान श्रीकृष्ण के गुरु सांदीपनिजी का आश्रम कहाँ है ?

(७) किस नगरी को भगवान श्रीकृष्ण ने राजधानी बनाया था ?

उत्तर : (१) अयोध्या (२) मथुरा (३) हरिद्वार (४) काशी (५) कांची (६) उज्जैन (७) द्वारका

भगवन्नाम-जप की अलौकिक महिमा
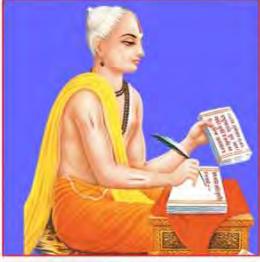
भगवन्नाम अनंत माधुर्य, ऐश्वर्य और सुखों की खान है । भगवन्नाम में अमोघ शक्ति है । कलियुग में अनेकों दोष हैं किंतु इसमें एक बहुत बड़ा गुण भी है कि केवल भगवन्नाम का कीर्तन, जप, स्मरण आदि लोगों के पाप, ताप, अशांति व दुःखों को दूर कर ब्रह्म-परमात्मा का रस जगा देता है । संत तुलसीदासजी ने भी रामायण में भगवन्नाम-जप की खूब महिमा गायी है । वे कहते हैं : **नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ ।** भगवन्नाम से आज तक कितनों का मंगल हुआ इसकी गणना कोई नहीं कर सकता । नाम की महिमा को गणेशजी जानते हैं, इस नाम के प्रभाव से ही वे सबसे पहले पूजे जाते हैं।

महिमा जासु जान गनराऊ ।
प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ ।।

(श्री रामचरित. बा.कां. : १८.२)

वाल्मीकिजी जो उलटा नाम जपकर पवित्र हो गये, वे भगवन्नाम के प्रताप को जानते हैं।

जान आदिकबि नाम प्रतापू ।
भयउ सुद्ध करि उलटा जापू ।।
(बाल कां. : १८.३)

भगवन्नाम के प्रभाव को शिवजी भलीभाँति जानते हैं । इसीके प्रभाव के कारण कालकूट जहर ने उनको अमृत का फल दिया है । भगवान शिवजी भी महामंत्र का जप करते हैं और हमें मंत्रजप करने की प्रेरणा देते हैं।

महामंत्र जोइ जपत महेसू ।

देवर्षि नारदजी ने नाम के प्रताप को जाना है । हरि सारे संसार को प्यारे हैं, हरि को हर प्यारे हैं और नारदजी हरि और हर दोनों को प्रिय हैं।

नारद जानेउ नाम प्रतापू ।
जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू ।।
(बाल कां. : २५.२)

प्रह्लाद के भगवन्नाम-जप से प्रसन्न होकर प्रभु ने कृपा की, जिससे प्रह्लाद भक्तशिरोमणि हो गये । सारे भरोसे त्यागकर जो भगवान को भजता है और प्रेमसहित उनके गुणसमूहों को गाता है, वह भवसागर से तर जाता है इसमें कोई संदेह नहीं । यूँ तो चारों युगों व चारों वेदों में भगवन्नाम का प्रभाव है किंतु कलियुग में विशेष रूप से है । इसमें तो दूसरा कोई उपाय ही नहीं है।

संत एकनाथजी महाराज कहते हैं : ''सकाम भाव से नामस्मरण करने पर वह हर इच्छा को पूर्ण कर देता है । निष्काम भाव से नामस्मरण करने पर वह पापों को भस्म कर देता है।''

श्रद्धापूर्वक ईश्वर-नाम का जप करने से वही ब्रह्म ऐसे प्रकट हो जाता है जैसे रत्न के जानने से उसका मूल्य । संत तुलसीदासजी आगे कहते हैं कि ''नाम राम से भी बड़ा है । श्रीरामजी ने एक अहिल्या को ही तारा परंतु नाम ने करोड़ों दुष्टों की बिगड़ी बुद्धि को सुधार दिया । रामजी ने राक्षसों के समूह को मारा परंतु नाम तो कलियुग के सारे पापों की जड़ उखाड़नेवाला है, संसार के सब भयों का नाश करनेवाला है । रामजी ने तो शबरी, जटायु आदि उत्तम सेवकों को ही मुक्ति दी परंतु नाम ने अगणित दुष्टों का उद्धार किया है।''

भगवन्नाम के प्रताप से पत्थर तैरने लगे । इसीके बल से वानर-सेना ने रावण के छक्के छुड़ा दिये । इसीके सहारे हनुमानजी ने पर्वत उठा लिया और राक्षसों के बीच रहने पर भी सीताजी अपने सतीत्व को बचा सकीं।

सर्दियों के लिए बल व पुष्टि का खजाना

★ रात को भिगोयी हुई १ चम्मच उड़द की दाल सुबह महीन पीसकर उसमें २ चम्मच शुद्ध शहद मिला के चाटें। १-१.३० घंटे बाद मिश्रीयुक्त दूध पियें। पूरी सर्दी यह प्रयोग करने से शरीर बलिष्ठ और सुडौल बनता है तथा वीर्य की वृद्धि होती है।

★ दूध के साथ शतावरी का २-३ ग्राम चूर्ण लेने से दुबले-पतले व्यक्ति, विशेषतः महिलाएँ कुछ ही दिनों में पुष्ट हो जाती हैं। यह चूर्ण स्नायु संस्थान को भी शक्ति देता है।

★ १०० ग्राम अश्वगंधा चूर्ण को २० ग्राम घी में मिलाकर मिट्टी के पात्र में रख दें। सुबह ३ ग्राम चूर्ण दूध के साथ नियमित लेने से कुछ ही दिनों में बल-वीर्य की वृद्धि होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है।

★ रात को भिगोयी हुई ५-७ खजूर सुबह खाकर दूध पीना या सिंघाड़े का देशी घी में बना हलवा खाना शरीर के लिए पुष्टिकारक है।

★ रोज रात को सोते समय भुनी हुई सौंफ खाकर पानी पीने से दिमाग तथा आँखों की कमजोरी में लाभ होता है।

★ आँवला चूर्ण, घी तथा शहद समान मात्रा में मिलाकर रख लें। रोज सुबह एक चम्मच खाने से शरीर के बल, नेत्रज्योति, वीर्य तथा कांति में वृद्धि होती है। हड्डियाँ मजबूत बनती हैं।

शक्तिवर्धक खीर : ३ चम्मच गेहूँ का दलिया व २ चम्मच खसखस रात को पानी में भिगो दें। प्रातः इसमें दूध और मिश्री डालकर पकायें। आवश्यकता अनुसार मात्रा घटा-बढ़ा सकते हैं। यह खीर शक्तिवर्धक है।

हड्डी जोड़नेवाला हलवा : गेहूँ के आटे में गुड़ व ५ ग्राम बला चूर्ण डाल के बनाया गया हलवा (शीरा) खाने से टूटी हुई हड्डी शीघ्र जुड़ जाती है। दर्द में भी आराम होता है।

अपनायें आरोग्यरक्षक, शक्तिवर्धक उपाय

★ सर्दियों में हरी अथवा सूखी मेथी का सेवन करने से शरीर के ८० प्रकार के वायु-रोगों में लाभ होता है।

★ सब प्रकार के उदर-रोगों में मट्ठे और देशी गाय के मूत्र का सेवन अति लाभदायक है।

(गोमूत्र न मिल पाये तो गोझरण अर्क का उपयोग कर सकते हैं।)

भयंकर कमरदर्द और स्लिप्ड डिस्क का अनुभूत प्रयोग

ग्वारपाठे (घृतकुमारी) का छिलका उतारकर गूदे को कुचल के बारीक पीस लें। आवश्यकतानुसार आटा लेकर उसे देशी घी में गुलाबी होने तक सेंक लें। फिर उसमें ग्वारपाठे का गूदा मिलाकर सेंकें। जब घी छूटने लगे तब उसमें पिसी मिश्री मिला के २०-२० ग्राम के लड्डू बना लें। आवश्यकतानुसार तीन-चार सप्ताह तक रोज सुबह खाली पेट एक लड्डू खाते रहने से भयंकर कमरदर्द समाप्त हो जाता है।

सावधानी : देशी ग्वारपाठे का ही उपयोग करें, हाइब्रिड नहीं।

ईश्वर का मार्ग कायरों का मार्ग नहीं है, यह शूरवीरों का मार्ग है।

पुष्टिकारक, सुलभ योग एवं औषधियाँ

संजीवनी गोली

प्रचंड रोगनाशक क्षमतावाली यह गोली व्यक्ति को

शक्तिशाली, ओजस्वी, तेजस्वी व मेधावी बनाती है । सप्तधातु व पंचज्ञानेन्द्रियों को दृढ़ बनाकर वृद्धावस्था को दूर रखती है । हृदय, मस्तिष्क व पाचन संस्थान को विशेष बल प्रदान करती है।

विशेष : सर्दियों में बच्चों और उनके माता-पिता के लिए यह गोली वरदान है।

अश्वगंधा पाक

यह पुष्टिवर्धक, वीर्यवर्धक, स्नायु व मांसपेशियों

को ताकत देनेवाला एवं कद बढ़ानेवाला है। नसों व धातु की कमजोरी, क्षयरोग (टी.बी.) आदि के लिए उत्तम औषधि है। मांस व शुक्र धातु की वृद्धि करता है। मानसिक तनाव, यादशक्ति की कमी, अनिद्रा रोग दूर करता है। दूध के साथ इसका सेवन करने से शरीर में लाल रक्तकणों की वृद्धि होती है, जठराग्नि प्रदीप्त होती है, शरीर में शक्ति व कांति की वृद्धि होती है।

पुष्टि गोलियाँ

श्रेष्ठ रसायन औषधियों से निर्मित यह गोली शरीर को हृष्ट-पुष्ट और शक्तिशाली बनाती है । कृशकाय एवं दुर्बल व्यक्तियों को इसका सेवन बहुत लाभदायी है । इससे खुलकर भूख लगती है।

सेब जाम

यह पोषक तत्त्वों से भरपूर, पचने में हलका है । हृदयरोग, शारीरिक व मानसिक कमजोरी, खून की कमी, कब्ज, टी.बी. व भूख की कमी को दूर करता है। मस्तिष्क को पोषण देता है तथा स्मृतिनाश से रक्षा व कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम करता है।

संत च्यवनप्राश (केसर)

यह वीर्यवान आँवले, प्रवालपिष्टी, घी, शतावरी, केसर, रजत भस्म, बंग भस्म, अभ्रक भस्म और लौह भस्म आदि ५६ जड़ी-बूटियों के अलावा हिमालय से लायी गयी वज्रबला डालकर विधिपूर्वक बनाया गया है । यह बल-वीर्य, स्मरणशक्ति व बुद्धि वर्धक, सौंदर्य और प्रसन्नता देनेवाला है। बुढ़ापे को दूर रखता है तथा भूख बढ़ाता है। यह शुक्रदोष, पुरानी खाँसी, क्षयरोग, फेफड़ों और मूत्राशय के रोग तथा हृदयरोगों में विशेष लाभकारी है।

सौभाग्य शुंठी पाक

यह उत्तम बलवर्धक है। यह केसर, सोंठ, गाय का दूध व घी, ब्राह्मी, शतावरी, अश्वगंधा, सफेद मूसली,

लौहभस्म, शिलाजीत, छुहारा, विदारीकंद, जायफल आदि बहुमूल्य जड़ी-बूटियों से बनाया गया है। इसकी महिमा भगवान शिवजी ने माँ पार्वतीजी को बतायी थी। इसके सेवन से ८० प्रकार के वातरोग, ४० प्रकार के पित्तरोग, २० प्रकार के कफरोग, ८ प्रकार के ज्वर, १८ प्रकार के मूत्ररोग तथा कान, मुख, नेत्र व मस्तिष्क के रोग एवं बस्तिशूल व योनिशूल समूल नष्ट हो जाते हैं।

होमियो तुलसी गोलियाँ

इनके नियमित सेवन से स्मरणशक्ति व पाचनशक्ति में वृद्धि होती है। यह हृदयरोग, दमा, टी.बी., विष-विकार, ऋतु-परिवर्तनजन्य सर्दी-जुकाम, श्वास-खाँसी, त्वचासंबंधी रोग, सिरदर्द, संधिवात, डायबिटीज, यौन-दुर्बलता, कृमि रोग एवं गले के रोगों में लाभदायी है। हृदय, लीवर, आमाशय हेतु बलवर्धक है। इससे मोटे व्यक्ति का वजन घटता है एवं दुबले-पतले व्यक्ति का वजन बढ़ता है। यह सभीके लिए लाभदायी है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : ९२१८११२२३३

ये पुष्टिवर्धक योग एवं औषधियाँ आश्रमों व समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध हैं।

नोबल शांति पुरस्कार मिला अब परम शांति चाहिए

पूज्य गुरुदेव भगवान के श्रीचरणों में साष्टांग दंडवत् प्रणाम !

मैं वर्तमान में भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद (IIMA) में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हूँ। मेरा सौभाग्य है कि मुझे पूज्य बापूजी से गुरुदीक्षा मिली। गुरुमंत्र के नियमित जप से मुझे आध्यात्मिक और सांसारिक हर क्षेत्र में अच्छी सफलता मिली। जल-वायु परिवर्तन संबंधी खोज में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए सन् २००७ में मुझे प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा सम्मानित किया गया। इसी वर्ष विश्व में श्रेष्ठतम माना जानेवाला 'नोबल शांति पुरस्कार' जीतनेवाली IPCC टीम का मैं भी एक सदस्य था। २०१० में IIMA द्वारा उच्च कोटि के अनुसंधान के लिए अति विशिष्ट युवा व्याख्याता के पुरस्कार से मुझे पुरस्कृत किया गया। यह सब केवल बापूजी की दीक्षा व कृपा का फल है। पूज्य गुरुदेव साक्षात् ज्ञानमूर्ति परब्रह्म हैं और हमारा ज्ञान उनके ज्ञान के करोड़वें हिस्से से भी अत्यंत छोटा है। आपके सत्संग से मुझे अपने मैनेजमेंट विषय तथा शोध के बारे में अंतर्दृष्टि और महत्त्वपूर्ण संकेत मिलते हैं, जिनका समुचित उपयोग मैं सफलतापूर्वक अपनी कक्षा में तथा अनुसंधान के कार्यों में करता हूँ।

पूज्य गुरुदेव से मेरी प्रार्थना है कि 'गुरुदेव ! आपकी जो इच्छा हो वह रह जाय, मेरी हो सो जल जाय।' बस हमें और कुछ नहीं चाहिए।

संयम-सदाचार, ब्रह्मचर्य-पालन जैसे श्रेष्ठ संस्कारों को जन-जन के जीवन में स्थापित करनेवाले पूज्य बापूजी पर लगाया गया आरोप सूरज में अँधेरे की थोथी कल्पना करने जैसा है। मुझे विश्वास है कि परम पूजनीय बापूजी के खिलाफ की गयी साजिश का पर्दाफाश होगा और सत्य की विजय होगी।

- अमित गर्ग, अहमदाबाद

सेवा से मिला प्रसाद जिसने मिटाया परिवार का विषाद

किसीने मेरे पति पर हमला किया और उन्हें अधमरा करके सड़क पर फेंक दिया। अस्पताल ले गये तो डॉक्टर ने बताया कि ''बाजू, पैर व जबड़े में फ्रैक्चर हैं।'' कंधे व पैर का ऑपरेशन तो हो गया पर जब तीसरा ऑपरेशन किया तो उनकी हालत इतनी गम्भीर हो गयी कि उन्हें साँस में तकलीफ होने लगी। डॉक्टरों ने वेंटीलेटर लगा दिया।

मेरे गले में पूज्य बापूजी की स्पर्श की हुई तुलसी माला थी। मेरी बहन ने वह माला मेरे पति को स्पर्श कराने के लिए मुझसे ले ली और जब वह अंदर गयी तो देखा कि मेरे पति लगभग प्राणहीन हो चुके हैं। फिर भी उसने गुरुदेव का ध्यान करके वह माला उनके माथे पर स्पर्श करायी और बापूजी से प्रार्थना की : 'अब आप ही इनके प्राणों को वापस ला सकते हैं।' आँखों में आँसू लेकर वह वापस आयी और बोली : ''दीदी ! उनमें कुछ नहीं बचा है, अब बापूजी ही कुछ कर सकते हैं।'' मुझे गुरुदेव पर विश्वास था, मैं हिम्मत नहीं हारी। मैंने सब रिश्तेदारों को 'श्री आशारामायण' का पाठ करने के लिए कहा और मैंने भी पाठ आरम्भ कर दिया। अभी दस-ग्यारह ही पाठ हुए थे तभी डॉक्टर ने फिर से बहन को अंदर बुलाया तो मेरे पति ने सजग होकर सिर हिला के इशारा किया। धन्य हैं मेरे गुरुदेव जिन्होंने मेरे पति के प्राण वापस ला दिये ! ऐसे गुरुदेव के उपकारों का बदला हम कभी नहीं चुका सकते हैं।

- श्रीमती दर्शना शर्मा, अम्बाला (हरि.), मो. : ९८१२५९०३९५

जोधपुर कारागृह के बाहर भक्तों ने मनायी अनोखी दिवाली

प्रायः पर्व-त्यौहारों में जेल के बाहर की सड़कें सूनी व वीरान होती हैं लेकिन जब से पूज्य बापूजी का जोधपुर कारागृह में आगमन हुआ है, तब से यह तीर्थधाम बन गया है और पिछले १४ महीनों से कारागार के बाहर भक्तों का ताँता लगा रहता है।

दीपावली के दिन पूज्य बापूजी के दर्शन के लिए देशभर से आये साधकों ने संध्या के समय कारागृह के मुख्य द्वार के पास दीपमालाएँ व रंगोली सजायी तथा दीवारों को दीपकों से जगमगा दिया। श्रद्धालुओं ने पूज्य बापूजी का एक बड़ा श्रीचित्र विराजमान कर आरती व पुष्प वर्षा की। अपने सद्गुरु के दर्शन के लिए व्याकुल भक्तों की गीली आँखें, पूजन के लिए हाथों में दीपक और भजन-आरती की ध्वनि... बड़ा ही अद्भुत नजारा था वहाँ का ! देर रात तक कीर्तन, जप व प्रार्थना के साथ साधकों ने निराली दिवाली मनायी।

दीपावली पर जगमगाये निःस्वार्थ सेवा के दीप

दीपावली में एक तरफ घरों में लोग मिठाई खाते-खिलाते हैं, नये कपड़े, बर्तन लाते हैं वहीं दूसरी ओर ऐसे परिवार भी हैं जिन्हें सूखी रोटी भी नसीब नहीं होती, तन ढँकने के लिए वस्त्र नहीं होते। करुणासिंधु पूज्य बापूजी हर वर्ष दिवाली के दिनों में ऐसे अभावग्रस्त आदिवासी इलाकों में जाकर गरीबों में अनाज, कपड़े, बर्तन, मिठाई, गर्म भोजन के डिब्बे, नकद रुपये एवं विभिन्न जीवनोपयोगी वस्तुओं के वितरण व विशाल भंडारों के आयोजन के साथ ही सत्संग देकर गरीबों की भी दिवाली हमेशा सुखमय करते रहे हैं।

इससे धर्मांतरणवालों के मंसूबों पर पानी फिर गया और बापूजी की राष्ट्रहितकारी प्रवृत्तियों से जिन्हें नुकसान होता है ऐसी राष्ट्र-विखंडन चाहनेवाली ताकतों के साथ मिलकर उन्होंने एक सुनियोजित षड्यंत्र रच के पूज्य बापूजी पर बेबुनियाद, झूठे आरोप लगवाये और जेल भिजवा दिया। परंतु बापूजी के प्यारे साधक-शिष्यों ने अपने गुरुदेव के निर्देशानुसार पूरी तत्परता से अपने-अपने क्षेत्रों में पिछले साल की तरह इस बार भी दीपावली पर गरीबों की सेवा का अभियान चलाया।

संत श्री आशारामजी आश्रम, रायता (महा.) एवं इंदौर में हजारों गरीबों में भंडारे के साथ गेहूँ, दाल, चावल, कपड़े, बर्तन, मिठाई, तेल, दीपक आदि का वितरण किया गया। जोधपुर आश्रम में सैकड़ों गरीब परिवारों में मिठाई के डिब्बे, कपड़े, चावल, आटा, कम्बल, चप्पल, नकद रुपये व सत्साहित्य वितरित किया गया। ग्वालियर आश्रम द्वारा

२५ आदिवासी गाँवों में हजारों बच्चों को कपड़े, फुलझड़ी, मिठाई के डिब्बे, बिस्कुट, तुलसी टॉफी के पैकेट आदि दिये गये । देहरादून (उत्तराखंड) में गरीबों में मिठाई, कम्बल, बर्तन आदि बाँटे गये । सातारा (महा.) के अनाथ आश्रम के बच्चों में स्वेटर, मिठाई, नोटबुक एवं सत्साहित्य का वितरण किया गया । आमेट आश्रम द्वारा गरीबों में मिठाई, प्रसाद व अनाज वितरण तथा भंडारा किया गया ।

शाहजहाँपुर, फर्रूखाबाद, गाजियाबाद, बरेली, प्रयागराज, लखनऊ (उ.प्र.), अहमदाबाद, बड़ौदा, गोधरा, वापी, शेखपुर जि. पंचमहाल, मोलेथा (गुज.) अकोला, मालेगाँव (महा.), जालंधर (पंजाब), बिलासपुर, लैलूँगा (छ.ग.), शाजापुर, सीहोर, कपास्थल जि. धार, छिंदवाड़ा (म.प्र.), बाराँ (राज.), कठुआ (जम्मू-कश्मीर), खड़गपुर (प.बंगाल) आदि अनेक स्थानों पर गरीबों तथा आदिवासियों में वस्त्र, मिठाई, बर्तन, चप्पल, अनाज, नकद रुपये, दीया-बाती, तेल, तुलसी टॉफी के पैकेट आदि वस्तुएँ बाँटी गयीं ।

रायपुर के भवानीनगर (छ.ग.) में सैकड़ों गरीब परिवारों में जीवनोपयोगी सामग्रियों व सत्साहित्य का वितरण किया गया । 'बाल व कन्या छात्र मंडल' राजनांदगाँव (छ.ग.) के बच्चों ने वृद्धाश्रम में जाकर वृद्धों की सेवा करके तथा उन्हें कपड़े एवं अन्य जीवनोपयोगी वस्तुएँ देकर दिवाली मनायी । सिंदीगाँव जि. नवरंगपुर, जयपटना जि. कालाहांडी व संगमगुड़ा जि. कोरापुट (ओड़िशा) में चिकित्सकीय परामर्श के साथ होमियोपैथिक औषधियों का निःशुल्क वितरण किया गया तथा भंडारे का भी आयोजन किया गया ।

राजकोट, बोडेली, बड़ौदा, बारडोली, गोधरा, दाहोद (गुज.), छिंदवाड़ा, देवास, पंचेड़ (म.प्र.), जयपुर, बाराँ, अलवर (राज.), धमतरी, भँवरपुर (छ.ग.), डोम्बिवली (ठाणे-मुंबई), भुसावल, धुलिया, दोंडाईचा, बोईसर (महा.), भुवनेश्वर आदि में विशाल भंडारों एवं सामग्री वितरण का आयोजन किया गया । भँवरपुर (छ.ग.) में महिलाओं को लोहे की पेटियाँ (संदूकें) भी दी गयीं । अपने देश से दूर बैठे बोस्टन (यू.एस.ए.) के साधकों ने भी बापूजी के सिद्धांतों पर चलकर दीपावली महोत्सव मनाया ।

गरीबों की सेवा में लगा युवावर्ग

दीपावली पर डांगमाची जि. धमतरी, बेलौदी, रायपुर (छ.ग.), मैनपुरी, मथुरा (उ.प्र.), श्रीगंगानगर (राज.), देहरादून (उत्तराखंड), अहमदाबाद, जमशेदपुर आदि स्थानों में 'महिला उत्थान मंडल' एवं 'युवा सेवा संघ' द्वारा जरूरतमंद लोगों को जीवनोपयोगी वस्तुओं का वितरण किया गया तथा भगवन्नाम कीर्तन करवा के पूज्यश्री का नित्य आध्यात्मिक दीपावली मनाने का शुभ संदेश दिया गया। जम्मू में कुष्ठाश्रम में फल आदि का वितरण किया गया। भावनगर (गुज.) में दवाखानों एवं कुष्ठरोगियों के अस्पताल में फल आदि का वितरण किया गया।

गोपाष्टमी पर गोग्रास देकर किया गया गायों का पूजन

निकाली गयीं गौरक्षा रैलियाँ, सौंपे गये ज्ञापन

३१ अक्टूबर को देशभर के संत श्री आशारामजी आश्रमों, सेवा समितियों, युवा सेवा संघों, महिला उत्थान मंडलों एवं साधकों द्वारा गोपाष्टमी पर्व सैकड़ों स्थानों पर मनाया गया। अहमदाबाद आश्रम द्वारा गायों के लिए पापड़ी, मकई का आटा, गेहूँ का चोकर, सींगदाना, गुड़ आदि पौष्टिक चीजें मिलाकर १६००० लड्डू बनाये गये एवं अनेक स्थानों में जाकर गायों को खिलाये गये।

महिला उत्थान मंडलों द्वारा देशव्यापी गौ-रक्षा अभियान शुरू किया गया। इसके तहत देश के विभिन्न शहरों में गौ-रक्षा हेतु रैलियों का आयोजन हुआ तथा वरिष्ठ अधिकारियों, जैसे जिलाधिकारी, उपायुक्त, जिला दंडाधिकारी आदि को ज्ञापन सौंपते हुए गायों की रक्षा हेतु विशेष कानूनों को बनाने की माँग की गयी। गोपाष्टमी के दिन देवास, छिंदवाड़ा, इंदौर (म.प्र.), अलीगढ़, मथुरा, हाथरस, गाजियाबाद, इटावा, कानपुर (उ.प्र.), नासिक, धुलिया, जलगाँव (महा.), केसरापल्ली (ओड़िशा), जालंधर, फिरोजपुर, कपूरथला, अम्बाला (पंजाब), कोटा, निवाई (राज.), हिम्मतनगर, अहमदाबाद, राजकोट (गुज.), दुर्ग, रायपुर (छ.ग.), नीमच (म.प्र.) आदि स्थानों पर रैलियाँ निकाली गयीं। इन रैलियों में गौ-रक्षा से संबंधित पर्चे आदि का भी वितरण किया गया। नवम्बर के प्रथम सप्ताह में भी देश के विभिन्न शहरों में इस प्रकार की रैलियों का आयोजन किया जायेगा।

'दीपावली अनुष्ठान शिविर' में उमड़ा विद्यार्थियों का सैलाब

कुप्रचारकों ने भले ही बापूजी व आश्रम को बदनाम करने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा लिया हो परंतु साधकों की श्रद्धा तोड़ने में असफल ही रहे। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है २३ से २९ अक्टूबर तक दीपावली पर अहमदाबाद आश्रम में हुए ७ दिवसीय **'विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर'** में उमड़ी विशाल भीड़ । इस शिविर में ऐसे भी बहुत-से बच्चे, उनके माता-पिता व अन्य लोग आये थे जो पहले कभी आश्रम में आये ही नहीं थे।

ब्राह्ममुहूर्त में जागरण, भगवन्नाम-जप, ध्यान, कीर्तन, प्रार्थना, सत्संग-श्रवण, योगासन, प्राणायाम, पीपल परिक्रमा, तुलसी सेवन, सूर्य को अर्घ्यदान आदि भारतीय संस्कृति के आदर्श नियमों का अपनी दिनचर्या में पालन कर विद्यार्थियों ने सर्वांगीण उन्नति का अनुभव किया। यहाँ शिविरार्थियों ने परीक्षा में सफलता पाने के गुर, याददाश्त बढ़ाने के उपाय, स्वस्थ रहने की सरल युक्तियाँ व माता-पिता के आज्ञा-पालन की महत्ता सीखी-समझी। साथ ही भजन-कीर्तन, गायन, वक्तृत्व तथा लिखित स्पर्धा आदि में बच्चों ने उत्साह-पूर्वक भाग लिया। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। बच्चों ने गायों को गोग्रास खिलाकर गौ-सेवा भी की।

शिविर में नौनिहालों में शिक्षाएँ आत्मसात् करने का उत्साह देखा गया लेकिन उनकी आँखों में आँसू व हृदय में बापूजी के प्रत्यक्ष दर्शन न होने की वेदना थी।

शिविर में नौनिहालों में शिक्षाएँ आत्मसात् करने का उत्साह देखा गया लेकिन उनकी आँखों में आँसू व हृदय में बापूजी के प्रत्यक्ष दर्शन न होने की वेदना थी। उनकी पुकार पूज्य गुरुदेव तक पहुँची और शिविर के प्रथम दिन ही पूज्य गुरुदेव का दिवाली का शुभ संदेश प्राप्त हुआ जिसे पढ़-सुनकर शिविरार्थी भाव-विभोर हो गये। चौथे दिन पूज्य बापूजी द्वारा भेजा गया किशमिश और तुलसी का प्रसाद पाकर विद्यार्थियों की खुशी का ठिकाना न रहा। शिविर की पूर्णाहुति पर पूज्यश्री के आशीर्वचन सुनकर पुनः सबका हृदय आनंदित हो उठा, जिसमें परमात्मज्ञान की दिव्य कुंजियों का अनमोल प्रसाद पाकर बच्चे व साधक धन्य-धन्य हो गये!

इस शिविर में बच्चों को ७ दिन तक देशी गाय के दूध, खजूर, चारोली व पुष्टिदायक औषधियों से युक्त खीर पर रहकर अनुष्ठान करने की व्यवस्था की गयी थी, जिसका लाभ अधिकांश बच्चों ने लिया। नूतन वर्ष के दिन हड्डियों तक के रोगों का शमन करनेवाले 'पंचगव्य' का पान कराया गया। इसमें बापूजी से स्पर्श किया हुआ जल भी मिलाया गया था।

शिविर में बच्चों ने संकल्प लिया कि 'जिस तरह माता सीता की निर्दोषता को लव-कुश ने जन-जन तक पहुँचाया था, जैसे कबीरजी, स्वामी विवेकानंदजी, महात्मा बुद्ध आदि के सत्शिष्यों ने अपने गुरु की निर्दोषता को सम्पूर्ण समाज में पहुँचाया था, वैसे ही हम सब निर्दोष पूज्य बापूजी की सच्चाई समाज तक 'लोक कल्याण सेतु', 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका व विभिन्न सुप्रचार माध्यमों से पहुँचाकर जन-जागृति का कार्य करेंगे।'

दीपावली के शिविरार्थियों के लिए जोधपुर से आये बापूजी के आशीर्वचन

ॐ ॐ ॐ... सा विद्या या विमुक्तये।

शास्त्र कहते हैं : 'विद्या वही जो बंधनों से छुड़ा दे।' जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से बँधा है, उसके पास सोने की लंका हो तो भी हर दशहरे को दे दीयासलाई... समझ गये ! वासनाओं के बंधन में जो बँधा है वह कितना भी धनवान, सत्तावान, सौंदर्यवान, बुद्धिमान दिखे पर आत्मज्ञान के बिना उसका सब कुछ तुच्छ है। संत तुलसीदासजी ने कहा :

काम क्रोध अरु लोभ मोह की,
जब लग मन में खान।
तुलसी दोनों एक हैं, क्या मूरख अरु विद्वान ॥

समाज में आज के विद्वान, धनवान, सत्तावान, सौंदर्यवान देर-सवेर कैसी दुर्गति को प्राप्त हो जाते हैं ! कोई आत्महत्या करता है, कोई शराब पीकर, सट्टा, जुआ, जर्दा, तम्बाकू, व्यसन में सुख ढूँढ़कर जीवन तुच्छ कर देता है। धनभागी तो वे हैं जिन्हें विद्यार्थीकाल में सत्संग, सुमिरन और आत्मा-परमात्मा का ऊँचा ज्ञान और प्रभुप्राप्त महापुरुषों का सत्संग मिल जाता है !

धन्या माता पिता धन्यो गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद् गुरुभक्तता ॥

उनकी माता धन्य है, उनके पिता धन्य हैं, उनका कुल-गोत्र धन्य है। हे पार्वती ! वे जहाँ रहते हैं वह भूमि भी धन्य है ! यह शिवजी के वचनवाला श्लोक पक्का कर लेना।

प्यारे शिविरार्थी बच्चे-बच्चियाँ ! भाई-माई ! इरादा पक्का कर लो। ॐ ॐ आनंद... ॐ ॐ शांति... ॐ ॐ प्रभुजी... ॐ ॐ गुरुजी... ॐ ॐ प्यारेजी... ॐ ॐ मेरेजी... इस प्रकार आत्मविद्या के सत्संग में, सुमिरन में, सुख में तुम सभी जल्दी आगे बढ़ो। फिर पदवियाँ शोभायमान होंगी, सत्ता शोभायमान होगी। अंतरात्मा के सौंदर्य ने कुरूप सुकरात को भी महान बना दिया। १२ वर्ष के कुरूप, काले-कलूटे, टेढ़ी टाँगों एवं शरीर में आठ अंगों में वक्रतावाले अष्टावक्र मुनि को राजा जनक पूजते हैं और उनसे आत्मज्ञान, आत्मसुख पाकर धन्य होते हैं ! तुम उसी विद्या को पा रहे हो, पचाते जाओ ! सत्संग की पुस्तकों में से और कैसेटों में से रोज अमृतपान करो !

तुम मरनेवाला शरीर नहीं हो, दुःखी और भयभीत होनेवाला मन नहीं हो, राग-द्वेष में फँसनेवाली बुद्धि नहीं हो; तुम तो परमात्मा, गुरु के अमृतमय आत्मा हो। ॐ अमृतोऽसि। शाश्वतोऽसि। चैतन्योऽसि।

बापू के बच्चे, नहीं रहेंगे कच्चे ! आत्मविद्या पायेंगे, आत्मसुख पायेंगे, विश्वमानव को जगायेंगे।
एक सौ आठ जो पाठ करेंगे, उनके सारे काज सरेंगे।

हिम्मत, साहस, संयम, तत्परता, बुद्धि, शक्ति, पराक्रम ! हरि ॐ, हरि ॐ, हरि ॐ... (हास्य-प्रयोग)। शांति... शांति... शांति ! गहरी शांति ! जीभ तालू में लगा दो। तुम मन में इन वचनों को सुरक्षित कर लो। जैसे मोबाइल में नम्बर 'सेव' होते हैं ऐसे यह आशीर्वचन का पत्र अपने दिल में सुरक्षित कर लो।

इस बार शिविरार्थियों की संख्या पिछले साल से ११ गुनी है। अभी आऊँगा तो कितने गुनी होगी तुम ही जानो। कदम अपने आगे बढ़ाता चला जा ईश्वर की तरफ... !

अतीत के झरोखे से...

मानवता के सच्चे हितैषी

वर्ष २००० में संयुक्त राष्ट्र संघ **(UNO)** द्वारा आयोजित 'विश्वशांति शिखर सम्मेलन' में अनेक संतों को आमंत्रण दिया गया । उनमें सर्वप्रथम नाम पूज्य बापूजी का था लेकिन देशवासियों के सुख-दुःख को अपना समझनेवाले, मानवता की सचमुच में सेवा करनेवाले बापूजी आदिवासियों को अन्न, वस्त्र, बर्तन आदि देने के कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए सम्मेलन में नहीं गये और अपने शिष्य को प्रतिनिधि के रूप में भेजा । पूज्य बापूजी ने संदेश भिजवाया : "सब धर्म, पंथ आदि एक नहीं हो सकते, सब पार्टियाँ एक नहीं हो सकतीं फिर भी सबमें छुपा हुआ विश्वचैतन्य एक है । उस एक विश्वचैतन्य के नाते, मानवता के नाते सभी मनुष्यों के बीच स्नेह हो सकता है, परस्पर प्रेमभाव हो सकता है, 'विविधता में एकता' स्थापित हो सकती है । इसी आधार पर हमें सभीकी उन्नति, सभीका मंगल, सभीका कल्याण सोचना और करना चाहिए । इसीमें सम्पूर्ण मानव-समुदाय का सच्चा कल्याण निहित है । विश्वमानव के कल्याण को दृष्टिगत रखकर प्रयास करने से ही वास्तव में विश्वशांति की स्थापना हो सकती है।"

दीपावली पर साधकों ने देशभर में गरीबों-जरूरतमंदों में किये भंडारे व वस्त्र, मिठाई, बर्तन, अन्न आदि का वितरण

रायता (महा.)
बेलौदी, जि. दुर्ग (छ.ग.)
डोंबिवली, जि. ठाणे
जबलपुर (म.प्र.)
पंचेड़ (म.प्र.)
पुणे
केसरापल्ली (ओड़िशा)
धुलिया (महा.)
छिंदवाड़ा
सीहोर (म.प्र.)
भुवनेश्वर
मुकेरियाँ (पंजाब)
रीवा (म.प्र.)
ढोराला, जि. उस्मानाबाद (महा.)
कोलकाता
रोहतक (हरि.)
मैनपुरी (उ.प्र.)

ओड़िशा के गरीब एवं आदिवासी क्षेत्रों में निःशुल्क चिकित्सा शिविर एवं दवाइयों का निःशुल्क वितरण

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

जोधपुर कारागृह के बाहर मनायी गयी अनोखी दिवाली

RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2014
Date of Publication: 1st Nov 2014

गोपाष्टमी पर देशभर में गौमाता की पूजा करके उन्हें खिलाये गये विशेष पौष्टिक लड्डू आदि पदार्थ और निकाली गयीं गौरक्षा रैलियाँ

ऋषि प्रसाद सम्मेलन

पुणे सम्मेलन में साधकों का उमड़ा हुजूम एवं ऋषि प्रसाद स्मृतिचिह्न वितरण

पटना सम्मेलन में माला-पूजन